* ॐ खं ब्रह्म *

सिद्धान्त भजन माला

[गोपीनाथ योगीकृत]

प्रकाशक —

श्री बंशीधर पुस्तकालय किशनगढ़, (राज.)

❀ ॐ तत्सत् ❀

— गोपीनाथ —

सिद्धान्त - भजन माला

रचयिता—

स्वामी श्री नानगनाथ जी योगेश्वर के शिष्य

श्री गोपीनाथ जी योगी

ग्राम चान्दू खुर्द, जि०-जयपुर (राज०)

प्रकाशक—

जोशी पुस्तक भवन

किशनगढ़ ३०५८०२ (राज०)

तृतीयबार १०००) सं० २०३७ विक्रमी १५) रुपया

❀ ॐ तत्सत् ❀

ब्रह्म गायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

दोहा

रक्षक प्रिय पालक प्रभु सुखप्रद जग करतार ।
शुद्ध मती कर ज्ञान दो टारो क्लेश विकार ॥

भजन तर्ज – बड़ा है सबमें भक्ती का दर्जा

बड़ा है सबसे ओ३म् नाम तत्सार ।
ओ३म् नाम बिन सिद्ध न होवे जप तप नेमाचार ।।टेर।।
ओरणादि मन प्रत्यो भाई, अवधातू से ओ३म्हि गाई ।
व्याकरण वाणी वेद गवाही, कर देखा निरधार ।।१।।
ओ मित्यो मिदगम ब्रह्म माई, व्यापक है वो सबके म ई,
श्रुति उपनिषद कहे समझाई प्रणवाक्षर उच्चार ।।२।।
अ,उ,म ब्रह्मजीव ओ माया, त्रय समुदाय ॐ बतलाया ।
लख अभेद धर ध्यानहि भाया हो भव सागर पार ।।३।।
भ्रू बिच ॐ अनहद तँह भाई, तामे ज्योति र मन थाई,
मन लय होय परम पद मांई, निज में आप निहार ।।४।।
ॐ अनादि अरूप अचल है, सब नामों में नाम सबल है,
जो सुमरे होवे निर्मल है, गोपीनाथ पुकार ।।५।।

* भूमिका *

— दोहा —

बिन सद गुरु होता नहीं, आत्म तत्व का ज्ञान ।
ज्ञान बिना नहि मोक्ष हो, कह सदग्रंथ बखान ।।

यह बात निर्विवाद सत्य है कि– बिना सद्गुरु के आत्म तत्व का बोध अर्थात ज्ञान नहीं होता और बिना ज्ञान के मोक्ष नही मिलती । बहुतसे लोग जो ब्रह्म लोकादि की प्राप्ति को मोक्ष मानते हैं परन्तु वह तो केवल अनित्य मोक्ष है, यथा–

आ ब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।

गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि हे अर्जुन ब्रह्मलोक से लेकर सारे लोक पुनरावर्ती यानी जिनको पाकर वापिस आना पड़े, ऐसे हैं अतः स्वर्गीय जीवात्माओं को 'क्षीणे पुण्ये मृत्युलोक विशन्ति' के अनुसार पुनः जन्म लेना ही पड़ता है। अतः नित्य सुख यानी मोक्ष का साधन तो केवल आत्म ज्ञान ही है। श्रुति में कहा है "ज्ञाना देवतु कैवल्यम्" यानी ज्ञान से हो मोक्ष मिलती है। गोस्वामी जी ने भी लिखा है:–

चौपाई–ज्ञान मोक्ष प्रद वेद बखाना ।

तदोपरान्त श्रुति मैं यह भी कहा है कि– 'ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्व पाशौ' अर्थात ज्ञान से ही सारे बन्धनों से मुक्ति मिल सकता है ।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि– आत्मज्ञान (अद्वैतभाव) से ही मोक्ष मिलसकती है तथा जीव ब्रह्म में भेद समझने वाला सदव भय से संतप्त तथा आवागमन के चक्कर में फसा रहता है ।

श्रुति में कहा है --

अन्यो ऽसावन्यो ऽहमस्मिति न सवेद—
यथं पशुरैव से देवानाम् ।

अर्थ–वह ब्रह्म दूसरा है और मैं साक्षी दूसरा हूँ, इस प्रकार जो जानता है वह द्वैतदर्शी पुरुष देवताओं के पशु की भांति है । साथ ही श्रुति ने अद्वैत दर्शी पुरुषों के हेतु लिखा है कि – 'न स पुनरावर्तते' यानी अद्वैत दर्शी (ज्ञानी) मोक्ष प्राप्ति के पश्चात पुनः कभी जन्म मरण को प्राप्त नहीं होता । साथ ही ज्ञान तथा ध्यान के सम्बन्ध में अद्वैताचार्यो ने निष्कर्ष स्वरूप लिखा है कि–

अभेद दर्शनं ज्ञानम् ध्यानम् निर्विषय मनः ।

जीव–ब्रह्म के भेद को त्याग देने का नाम ही ज्ञान (अभेद ज्ञान) है और विषयों से मन को रोक लेने ही का नाम ध्यान है ।

उपरोक्त निष्कर्षों के आधार भूत ही मैंने यह पुस्तिका लिखी है, जो चार प्रकरणों में है । यथा:—

(१) प्रथम प्रकरण–भजन संग्रह
(२) द्वितीय प्रकरण–कुण्डलिया
(३) तृतीय प्रकरण–प्रश्नोत्तर
(४) चतुर्थ प्रकरण–स्फुट भजन

निवेदक–

गोपीनाथ योगी

ग्राम–पालू खुर्द (जयपुर)

स्वामी श्री गोपीनाथजी महाराज

का

जीवन-चरित्र

❀ कुण्डलिया ❀

नमो नमो गुरुदेव को निशदिन बारम्बार।
नमो नमो गणनाथ को विघ्न निवारण हार ॥
विघ्न निवारण हार प्रथम हम तुम्हें मनावें।
विद्या दायक आप भक्त का काज बनावें ॥
जीवन चरित मैं लिखत हूँ दध अक्षर दो टार।
वर्मा मंगल चन्द की अर्जी हो स्वीकार ॥१॥
स्वामी गोपीनाथ की कहूँ जीवनी गाय।
पिता जु छींतरनाथ जो सुन्दर बाई माय ॥
सुन्दर बाई माय साल उन्नीसो इक्यासी।
अषाढ़ सुदी पंचमी दिवस जन्मे सुखराशी ॥
पालू नगर जयपुर जिला बसा सड़क के पास।
वर्मा मंगलचंद लिखा जीवन चरित प्रकाश ॥

विनीत—

मंगल चन्द

ग्राम पालूखुर्द (जयपुर)

आवश्यक सूचना

प्रिय सज्जनो,

मेरे द्वारा रचित गोपीनाथ - सिद्धान्त भजनमाला प्रथम संस्करण जो लगभग १५-२० वर्ष पूर्व छापा था आप ने पढ़ा होगा अब उसी पुस्तक का दूसरा संस्करण उसमें काफी भजन कुण्डलिया प्रश्नोत्तर तथा शिष्यों के भजनादि बढ़ाकर प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रायः प्रत्येक पुस्तक में कम्पोजिंग प्रूफरीडिंग प्रिंटिंग में सावधानी बरतने के उपरान्त भी ५-१० अशुद्धियां रहजाना कोई बड़ी बात नहीं अतः जहां पर भी ऐसी कोई त्रुटि आपको दिखाई दे, सुधारकर पढ़ें।

अन्त में मैं यह भी प्रगट करदेना चाहता हूँ कि इस संशोधन में पं० बंशीधरजी शर्मा किशनगढ़ ने जो सहयोग किया है उसके आभार स्वरूप भविष्य में इसके पुनर्मुद्रण के सर्वाधिकार उन्हीं के पुत्र की संस्थान जोशी पुस्तक भवन किशनगढ़ को दे रहा हूँ। अस्तु, सभी अवगत रहें।

भवदीय–

ता०-१-१-८०ई०] गोपीनाथ योगी

पालू खुर्द

विषय सूची

प्रथम प्रकरण (भजन) पृष्ठांक

द्वितीय प्रकरण (कुण्डलिया)

तृतीय प्रकरण (प्रश्नोत्तर)

चतुर्थ प्रकरण (स्फुट भजन)

❀ विषय सूची समाप्त ❀

॥ ॐ तत्सत् ॥

गोपनाथ सिद्धान्त भजनमाला

प्रारम्भ

❀ मंगलाचरण ❀

ॐ नमस्ते गणपतये, त्वमेव प्रत्यक्षंतत्वमसि
त्वमेव केवलं कर्तासि, त्वमेव केवलं धर्तासि
त्वमेव केवलं हर्तासि, त्वमेव सर्वं खल्विदं
ब्रह्मस्मित्वं साक्षादात्मसि, नित्यम् इति श्रुति ।

❀ दोहा ❀

गणपति तुम को नमस्ते, कर्ता हर्ता आप ।
चेतन शुद्ध स्वरूप तुम, जपूं तुम्हारा जाप ॥

(भजन नं० १ राग—कव्वाली)

गुरु गणपति महाराज महा, हम प्रथम तुम्हें मनाते हैं ।
अर्जी सेवक की सुन लेना, नितउठ ध्यान लगाते हैं ॥टेर॥
जो तुमको प्रथम सुमरते हैं उनके सब काम बनते हैं ।
तुम्हरे सुमरे बिन काज करे, सो भटक २ दुःख पाते हैं ॥१॥
जिस पर तुमरो किरपा होवे, उनको सब सार बताते हैं ।
जेहि सार असार विचार नहीं, सो भव जलधार बहाते हैं ॥२॥
जो सर्व गुणों के दाता हैं, मम विघन क्लेश नसाते हैं ।
उल्टा कारज सुल्टा करके, शुभ विद्या प्राप्त कराते हैं ॥३॥

गणनाथ यही वरदो हमको, ब्रह्मज्ञान सदा हम चाहतेहैं।
गोपीनाथ शरण तुम्हरी, भक्तों को पार लगाते हैं ॥४॥

(भजन न० २ राग–गजल धमाल)

गुरु मैं दास हूँ तेरा, दया कर पार कर दीज्यो ॥टेर॥
रात दिन नींद नहीं आती, आतमा चैन नहीं पाती।
भर्मना मन को भटकाती, अर्ज स्वीकार कर लीज्यो ॥१॥
वर्षा बिन चातक तरसावै, नीर बिना मीन दुख पावै।
गुरु बिन भर्म नहीं जावै, कृपा कर शरण में लीज्यो ॥२॥
गुरु यदि आप हो प्रसन्न, करादो आत्म का दर्शन।
होय अज्ञान का मरशन, ज्ञान दीपक जगा दीज्यो ॥३॥
न जाऊं द्वारिका काशी, मैं आतम तीर्थ अविनाशी।
कह गोपीनाथ सुख रासी, मोक्ष अमृत पिला दीज्यो। ४॥

(भजन नं० ३ राग–मारवाड़ी)

गुरु मैं हूँ दास तुमारोजी, मेरो बिगड़्यो काज सुधारो ॥टेर॥
भव सिन्धु में डूबी नैया, स्वामी आप बनो खेवैयाजो,
कर पकड़ किनारे डारो ॥१॥ गुरु आगया शरण तिहारी,
मम खोलो भर्म किवारीजी, म्हारो हर अज्ञान अंधारो ॥२॥
देवो आत्म ज्ञान की युक्ती, मैं पाऊं जीवन मुक्तीजी,
दर्शे निज रूप हमारो ॥३॥ गुण गोपीनाथ यों गावै, चरणों
में शीश निवावेजी, यश भूलूं नहीं तुमारो ॥४॥

(भजन नं० ४ राग–मारवाड़ी)

सैयो सतगुरुजी आया ये।
डूब रहा भव सिन्धु में पैली पार लगायाऐ ॥टेर॥
सूता मोह निद्रा के मांय, मैं तो भूलरहा गम नांय।
सतगुरु आकर पकड़ी बांथ, मुझे झट चेत कराया ये ॥१॥
दीन्हा तत्व मूल उपदेश, तब तो मिट गया रागद्वेष।
मेरे शंका रही न लेश, सदा उर आनन्द छाया ये ॥२॥
बताया श्रवण मनन निदिध्यास, जिनका खूब किया अभ्यास।
अब मोहे होय गया विश्वास, आप में आप लखाया ये ॥३॥
सतगुरु दिया वेदान्त पढ़ाय, संशय सारा गया बिलाय।
गोपीनाथ कहे यों गाय, जन्म और मरण मिटाया ये ॥४॥

(भजन नं० ५ राग— ादरा)

कृपा कीनी हैं गुरुदेव, मोजा मानी है सैयो ॥टेर॥
वैराग तीव्र धार के गुरु, चरण मांय गयो।
सतउपदेश सुनाय, मेरा सिर पर हाथ दयो ॥१॥
जब तक सतगुरु मिल्या नाहीं, तब तक भूल रयो।
गुरु मिल्यां से मरहम जानी, अब मोहि चेत भयो ॥२॥
मेरे ज्ञान मुझ ही में पाई, आदू मार्ग लयो।
सदा एक रस डिगे न डोले, ना कोई मरण जियो ॥३॥
नानगनाथ मिल्या गुरु पूरा, जब मोहि ज्ञान थयो।
गोपीनाथ शरण सतगुरु की, गुरु गम पन्थ गह्यो ॥४॥

(भजन न० ६ राग–आसावरी)

अब मै सतगुरु पूरा पाया ।
होगई लहर महर सतगुरु की, तत्व मूल दर्शाया ।।टेर।।
निर्गुण स्वरूप सतगुरु स्वामी, अविगत अचल अथाया ।
भक्त जनों के तारण कारण; सर्गुण नाम धराया ।।१।।
पांच कोश ओर तीन देह का, सब सन्देह मिटाया ।
जाग्रत स्वप्न सुशोपति तीनों, कर निर्णय फरमाया ।।२।।
पांच तरह का भेद मिटाके, ब्रह्म अद्वैत लखाया ।
नाम रूप सब प्रपंच मिथ्या, चेतन पुरुष अजाया ।।३।।
नानगनाथ मिल्या गुरु पूरा, पद पूरण पहुँचाया ।
गोपीनाथ खुद मस्त हुवा, सब छोड़ खुदी का दाया ।।४।।

(भजन नं० ७ राग–प्रसावरी)

मनरे गुरु शरण में चालो ।
गुरु पद पर्श हर्ष मन मूरख यम दे जावे टालो ।।टेर।।
लोक लाज मर्याद छोड़कर, बन सतगुरु को बालो ।
तत्व मसि उपदेश समझके, सब पाखण्ड निकालो ।।१।।
सोहम् आप जाप जप अजपा, त्रिविध ताप छुड़ालो ।
चक्षू ज्ञान खुले अन्तर के, घट में होय उजालो ।।२।।
तू शुद्ध चेतन अगम अगोचर, अपने में आप सम्भालो ।
अप्रोक्ष अनुभव आतम स्वरूप लख, बचन गुरू का पालो ।।३।।
नानगनाथ मिल्या गुरु पूरा, पल में कियो निहालो ।
गोपीनाथ गुरू पद पाकर, हुयो मग्न मतवालो ।।४।।

(भजन नं० ८ राग—आसावरी)

मनवा शरणों ले गुरु सज्जन को।
दुर्जन संग त्याग मन मूरख, सहारो पकड़ भजन को ।।टेर।।
जूवा मांस शराब वैश्या, चोरी परनारी परधन को।
यही नर्क के हेतु कहिये, तजदे सात व्यसन को ।।१।।
मत करे तू पाखण्ड पूजा, मत जावे तीर्थ बन को।
आंख कान मुख नाक रोक मत, निरखें रूप ततवन को ।।२।।
यह सब छोड़ कल्पना मनकी, पकड़ो गुरू चरण को।
श्रवण मनन निदिध्यासन करके, पाले आतम रतन को ।।३।।
आतम अजर अमर अविनाशी, है स्वरूप चेतन को।
गोपीनाथ निर्भय पद पाके, भय तज जन्म मरण को ।।४।।

(भजन नं० ६ राग—बनजारा)

हरिनाम सुमर ले प्यारा, तेरा होवे जय जय कारा ।।टेर।।
तू राम सुमरले भाई, दुर्लभ नर देही पाई।
अवसर ऐसो फिर नाहीं जी चूके मत दाव गंवारा ।।१।।
तू मोह माया में अंधा, क्यों भूल रहा गोविन्दा।
भज राम चेतकर बन्दाजी सुधरेगा जन्म तुम्हारा ।।२।।
तज कुटम्ब जाल की फांसी, तेरी छूट जाय चौरासी।
फिर भवमें वापिस नहीं आसीजी, होगा यमसे छुटकारा ।।३।।
छन्द गोपीनाथ यूं गावे, कर भजन सदा सुख पावे।
सब वेद सन्त फरमावेजी, मिल जाये मोक्ष का द्वारा ।।४।।

(भजन नं० १० राग—कस्तूरो)

ईश्वर का निज नाम ओम सतगुरु फरमावे रे ।।टेर।।
अकार उकार मकार मात्रा तीन बतावे रे ।
तीनों का समुदाय, ओम वेदों में गावे रे ।।१।।
वाच्य ब्रह्म का वाचक ओम, वेदान्त सुनावे रे ।
वृती शक्ती और लक्षणा, दो ठहरावे रे ।।२।।
ओमही ब्रह्म और सब कुछ, क्यों मन भटकावे रे ।
खं ब्रह्म यह मन्त्र वेद का, जपे जपावे रे । ।।३।।
योही उलटकर अंतमुंख, सोहम् बन जावे रे ।
सो ही हमारा ईष्ट और कुछ मन नहिं भावे रे ।।४।।
नाम दान सतगुरु देवे, वोही पार लगावे रे ।
गोपीनाथ कर सुमरण वृथा, क्यों जन्म गुमावे रे ।।५।।

(गजल नं० ११ राग—गजल ताल धमाल)

ईश से प्रेम कर प्यारा, भक्ति से होय निस्तारा ।।टेर।।
ऊंच नीचपन नाहीं, समझ मन भक्ति के मांही ।
भक्ति वश राम रघुराई, बचन यह मान तत्सारा ।।१।।
भक्ति है ज्ञान की माता, भक्ति सुत ज्ञान कहलाता ।
ज्ञान बिन मोक्ष नहीं पाता, सोही सन्मार्ग उरधारा ।।२।।
भक्ति और ज्ञान के मांई, भेद कुछ है नहीं भाई ।
यदि कुछ है तो इतनाई, आधेय और निर्धारा ।।३।।
बिना आधार काहे को, सतावे विघ्न माया को ।

यही फल हरिगुण गायां कों, विघ्न से होय छुटकारा ॥४॥
नाम गुण है बड़ा भारी, हो गये बहुत जन पारी।
जो गोपीनाथ गिरधारी, भजे तो होय भवपारा ॥५॥

(भजन नं० १२ राग–आसावरी)

कर मन सत संगत तत्सारा।
सार असार बिचार समझकर कर अपना निस्तारा ॥टेर॥
लख चौरासी भटकत भटकत, शुभ मानुष तन धारा।
जिसकी आशा करे देवता, यही मोक्ष का द्वारा ॥१॥
बिन सतसंग ज्ञान का मारग, जाने नहीं गंवारा।
सत्संग साधन हरि पावन को, शास्त्र किया निर्धारा ॥१॥
सत्संग से अनुभव हो अपना, मिटे भर्म अंधियारा।
जीव ब्रह्म की हुई एकता, तब निज रूप बिचारा ॥३॥
सतसंगत सत्य कर जानो, मानो बचन हमारा।
गोपीनाथ सत्संग की महिमा, श्रीमुख कृष्ण उचारा ॥४॥

(भजन नं० १३ राग–आसावरी)

साधो भाई अनुभव अजब दृणांई।
परख लियो निज रूप आपको भर्म रयो नहीं कांई ॥टेर॥
तीनों देव इन्द्र अरु जगती, यह सब मेरे मांई।
मुझ से जुदा अब कौन है, सोही आतम अवल अथाई ॥१॥
सोहम् प्रकाश आत्मा अनुभव, ज्यों को त्यों थिरथाई।
चेतन शुद्ध स्वरूप अनादो, गुरु मुख ज्ञानी पाई ॥२॥

ब्रह्म आतमा सब को जानी, जानी में जानी समाई।
जानी से जान जुदा बतलावें, सो तो अनुभव नाई ॥३॥
मैं जानी आतम निर्वाणी, वाणी कथ दर्शाई।
गोपीनाथ मैं सब का द्रष्टा, यूँ अनुभव अकथ अजाई ॥४॥

(गज़ल नं० १४ राग—बनजारा)

मैं हूँ ब्रह्म अनादि अपारा, गुरु मुख सेती तत्व विचारा ॥टेर॥
मैं हूँ अमर कभी नहीं मरता, काल फंद से मैं नहीं डरता।
मैं हूँ अखंड निर्लेप अकर्ता, नाम रूप से न्यारा ॥१॥
अस्ति भांति प्रिय रूप अखण्डा, नाम रूप माया अतिखंडा।
चेतन ज्ञान स्वरूप प्रचण्डा, सो ही स्वरूप हमारा ॥२॥
ईश्वर जीवके लगी उपाधि, माया और अविद्या आधि।
मैं हूँ ब्रह्म अत्यन्त अनादि, सबका जानन हारा ॥३।
देश काल वस्तु से न्यारा, मैं शुद्ध चेतन ब्रह्म अपारा।
गोपीनाथ सो ही उरधारा, यूं गुरु गम भेद निहारा। ४॥

❀ दोहा ❀

माया वाणी का अविशये सच्चिदानन्दस्वरूप।
तू शुद्ध चेतन आतमा नहीं रंक नहीं भूप॥

(भजन नं० १५ राग—गज़ल धमाल)

समझ कर देखले प्यारा, शुद्ध चेतन तू निर्धारा ॥टेर॥
दीनता त्याग दे सारी, परख स्वरूप सुखकारी।
मेट संशय सकल थारी, अचल तू ब्रह्म अविकारा ॥१॥

नहीं पुण्य पाप का कर्ता, नहीं जनमे नहीं मरता।
वोही तू फेर क्यों डरता, बन्द और मोक्ष से न्यारा ॥२॥
जोव और ईश, ब्रह्म, माया, तुझोसे भिन्न नहीं माया।
सर्व खल्विदं श्रुति गाया तू ही है वार तू ही पारा ॥३॥
गोपीनाथ कहे बानी, समझिये साख सहनानी।
होय तव भर्म की हानी, बचन सत धार इतबारा ॥४॥

(भजन नं० १६ राग-आसावरी)

कहां तक चलसी झूंट चलाई,
आखिर नीर झील में ठहरे सत आयां थक जाई। टेर॥
एक ब्रह्म अद्वैत अखण्डित पूरण पुरुष सदाई।
हिले, न चले, न छीजे, झलके अविगत अचल अथाई ॥१॥
ब्रह्म, बिम्ब प्रतिबिम्ब जीव है, सो चेतन की झांई।
आवे, जावे, कर्म फल भोगे, लख चौरासी मांई ॥२॥
भिन्न ब्रह्म से सत्ता जीव की, न्यारी दर्शे नाही।
यही भाव ले जीव ब्रह्म की दुई वेदान्त मिटाई ॥३॥
कर विचार छोड़ हठ अपनो खुदी तज्यां खुद थाई।
गोपीनाथ केवल अद्वैत में दूजो कहां समाई ॥४॥

❀ दोहा ❀

षट लिंगों के ज्ञान बिन, वेदान्त सम्बन्धी ग्रन्थ।
रच शोभा पावै नहीं, मन घड़ंत सो पन्थ ॥

(भजन नं० १७ राग–ग्रासावरी)

प्रथम षट लिंग जरा समझाना।
जब तक यह नहीं ग्रावे समझ में वृथा ग्रन्थ बनाना ।।टेर।।
ग्रनुभव शब्द की व्युत्पत्ति व्याकरण से बतलाना।
वास्तविक रूप कौन ग्रनुभव का कर निर्णय दर्शाना ।।१।।
शब्द की उत्पत्ति बता कहां से बृत्तियां कौन लखाना।
वाच, लक्ष का भेद बताके युक्ती सब फरमाना।।२।।
शब्द सामग्री बता कौन है शब्द रूप क्या माना।
वाणी चार किस प्रकार ऊठे यह भी करो बयाना ।।३।।
लक्षण, प्रमाण सहित प्रश्नों का उत्तर ठीक सुनाना।
गोंपीनाथ कहे नहीं सभा से कान दबा उठ जाना ।।४।।

❀ दोहा ❀

जो सिद्धान्त षट लिंग के, कहूं सभामें गाय।
शंसय सकल मिटायके, प्रकट देऊँ बताय ।।

(भजन नं० १८ राग--लावणी)

ग्रब मै वेदान्त सिद्धान्त शिरोमणि गाऊं।
प्रश्नों का उत्तर ठीक ठीक समझाऊं ।।टेर।।

(चौकड़ी) उपक्रम उपसंहार ग्रभ्यास ग्रपूर्वता जानो।
फल, ग्रर्थवाद उपपति नाम पहिचानो।
क्रमसे कहूं समझाय झूट मत जानो।
वेदों का यह भावार्थ सत्य उर ग्रानो ।।

चौपाई -- अद्वैत तत्व में आदि रु अन्ता ।
पुनि पुनि कथनाभ्यास कहन्ता ।।
श्रुति से भिन्न प्रमाणहि भाई ।
अविषय स्वयं प्रकाशी गाई ।।

शैर --- परमानन्द की प्रापती फल द्वैत की निंदासही ।
अद्वैत की स्तुति बड़ाई अर्थवाद सोही कही ।।
अद्वैतानुकूल दृष्टन्तसे प्रतिपादन उपपतिजानले ।
षटलिंगका सिद्धान्त यह संक्षेप मांही मानले ।।

मिलान -- अब आगे तुम को और खोल समझाऊँ ।।१।।

चौकड़ी -- उपलम्बोस्तव अनुभव अमरकोष गाता है ।
अर्थ जानना ही अनुभव कहलाता है ।
सोही पारखी दृष्टा ज्ञान तत्व पाता है ।
स्वरूप सर्वानुभव चेतन एक थाता है ।।

चौपाई -- शब्द की उत्पति नभ से गाई
साक्य लक्षणा वृति दर्शाई ।।
शक्ति वृत्ति वाच्यार्थ हि जाना ।।
लक्ष अर्थ लक्षणा पिछाना ।।

शैर --- आकांक्षा योग्यता स्मृति तात्पर्य पिछानिये ।
सामग्रीं यह शब्द की गुरु से समझ उर आनिये ।
ध्वन्यात्मक वर्णातमक द्वै रूप शब्दहि उच्चरे ।
अग्नि वायु सम्बन्धसे सो नाद को उत्पन करे ।।

मिलान -- अब वाणी चार का विवरण तुम्हें बताऊं ॥२॥

चौकड़ी -- नाद से अनहद तथा अनहद में ज्योति मानी ।
ज्योति में संकल्प संकल्प से उठतीं बानी ॥
परा पैशन्ती और मध्यमा आई ।
अक्षरों से मिल कहलाती बैखरी माई ॥

चौपाई -- ब्रह्म मुख परा नाभि अस्थाना ।
गुरु मुख हृदय पैशन्ती जाना ।
जीव मुख मदा कण्ठ के मांही ।
माया मुख बैखरि जिह्वा ठांही ॥

शेर — यथार्थ और न्याय सुन, भयानक रोचक चार है ।
प्रत्यक्ष शब्द उपमान अनुमान प्रमाणे निर्धार है ।
अर्थापति अनुपलब्धि प्रमा के षट प्रमाण है ।
इनमें ही सब जान है अरु जान अनुभव ज्ञान है ॥

मिलान -- यों यथार्थ अनुभव गुरूमुख से सुन पाऊं ॥३॥

चौकड़ी -- ब्रह्म ईश कूटस्थ जीव जग जाना ।
राम खुदा अरु गाड देव लख नाना ।
नाम गुण अनुकूल विभिन्न बखाना ।
नामी नाम अभिन्न क्यों झगड़ा ठाना ॥

चौपाई -- नामी चेतन रूप सदाही ।
कभी अचेतन है थिर नांही ॥

चेतन शुद्ध स्वरूप हमारा ।
चेतन सार, प्रपंच असारा ॥
शेर — हंस, न्याय सुबुद्धि हूसे सारासार विचारिये ।
तज अचेतन सारहीनहि चेतन सारहि धारिये ।
गुरू नानकनाथजी का यही सत उपदेश है ।
देश काल वस्तु परे निर्देश सो मम देश है ॥
मिलान -- कहे गोपीनाथ अपने में आप समाऊं ॥४॥

(भजन नं० १९ राग— आसावरी)

आरती गुरु गोविन्द की कीजै,
गुरु गोविन्द भव पार लगावें सदा शरण में रीजै । टेर॥
व्यवहारिक सत्ताको गोणसमझ परमार्थ सत्ता लखलीजै । जब सेवा कुछ बने गुरु की, तन मन, धन सब दीजै ॥१॥ तन से सेवा मन से सुमरण, धन से सम्मान करीजै । तन, मन, धन, देने को अर्थ यों जान ममं तज दीजै ॥२॥ आरती शब्द को अर्थ है आदर प्रेम सुधारस पीजै । श्रद्धा धार करो गुरु भक्ती दृढ विश्वास गहीजै ॥३॥ सकल मनोरथ करे गुरु पुरण सेवा मांय लगीजै । गोपीनाथ आरती गावें, परमानन्द परसीजै ॥४॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

❀ ॐ श्री गुरुवे नमः ❀

अथ द्वितीय प्रकरण

कुण्डलिया -- संग्रह

* प्रारम्भ *

(वस्तु निर्देश आत्मिक मंगलाचरण)

ॐ नमस्ते गणपते त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि ।
त्वमेव केवलं कर्तासि त्वमेव केवलं धर्तासि ।
त्वमेव केवलं हर्तासि त्वमेव सर्वं खल्विदं ।
ब्रह्मास्मि त्वं साक्षादात्मसि नित्यम् ॥

कुण्डलिया (१)

ओ३म् गणपति आपको नमस्कार हर बार ।
तुमहि प्रत्यक्ष तत्वहो विघन*निवारण हार ॥
विघन निवारणहार तुम्ही हो कर्ता धरता ।
गुण ज्ञानहि गंभीर पीर भव दुख के हरता ॥
चेतन शुद्ध स्वरूप गणपत साक्षी सच्चिदानन्द ।
गोपीनाथ वन्दन किये नाशे सब दुख द्वन्द ॥

* टिप्पणी – रसा, स्वाद, कषाय, विक्षेय और लय ।

गुरु महिमा का अंग प्रारम्भ

कुण्डलिया (२)

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु शिव गुरु गणपति गुरुईश ।
गुरु गोविन्द गुरु सूर्य सम गुरु ऋषिराज मुनीश ।।
गुरु ऋषिराज मुनीश गुरू ही गौ रक्षा दी ।
सन्त महन्त सुजान गुरू हैं आद अनादी ।।
नाथ गोपाल गुरुदेव के चरणनिवाऊँ शीश ।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु शिव गुरु गणपति गुरु ईश ।।

कुण्डलिया (३)

गुरु दाता ब्रह्म जन्म* के देय धर्म उपदेश ।
वृद्ध मात पितु से अधिक आदर करो हमेश ।।
आदर करो हमेश ब्रह्म विद्यावत माता ।
पिता गुरुवत ब्रह्मज्ञान है सुत कहलाता ।।
अठ साधन परिवार है मम गोपाल विशेष ।
गुरु दाता ब्रह्म जन्म के देय धर्म उपदेश ।।

कुण्डलिया (४)

जप तप तीरथ व्रत करो यज्ञ और बहुदान ।
गुरु बिन निश्फल जानिये बिरथा सभी निदान ।।

* टिप्पणी– ब्राह्मस्य जन्मनः कर्ता स्व धर्मस्य च शासिता ।
बालोपि विप्रो वृद्धस्य पिताभवति धर्मतः ॥

विरथा सभी तमाम ज्ञान गुरु बिन हो नाही।
बिना ज्ञान नहिं मोक्ष लिखी गुरुगीता माँही॥
सर्व क्रिया का मूल गुरु 'गोपीनाथ' पिछान।
जप तप तीरथ व्रत करो यज्ञ और बहु दान॥

कुण्डलिया (५)

चरण गुरू का धो पिये करे गुरू का ध्यान।
नाम गुरू का जो जपे होवे आतम ज्ञान॥
होवे आतम ज्ञान मर्मना भय सब टूटे।
परख लेय निज रूप जन्म अरु मरना छूटे॥
गोपीनाथ गुरु की कृपा मिले मोक्ष अस्थान।
चरण गुरू का धो पिये करे गुरू का ध्यान॥

कुण्डलिया (६)

गु का अर्थ अज्ञान है रू का अर्थ प्रकाश।
दोनों मिल गुरु होत है गुरु गीता कहे खाश॥
गुरु गीता कहे खाश तिमिर अज्ञान मिटादे।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म निज में दर्शादे॥
गोपीनाथ गुरुदेव में राखो दृढ़ विश्वास।
गु का अर्थ अज्ञान है रू का अर्थ प्रकाश॥

टिप्पणी – गु' कारस्वांधकारम्तु रू' कारस्तन्निरोधकृत।
अंधकार विनाशित्वाद गुरुरित्यमीधीयते॥

कुण्डलिया (७)

जाने वेद वेदान्त सो ब्रह्मश्रोत्रिय जान।
आत्म ब्रह्म अद्वैत विद सो ब्रह्मनीष्ठ पिछान ॥
सोब्रह्मनीष्ठ पिछान पंच * विधि भेद नशावे।
ब्रह्म अद्वैत अपार सत्य स्वरूप लखावे ॥
शान्ति उपरति श्रेयप्रद गोपीनाथ हिय मान।
जाने वेद वेदान्त सो ब्रह्म श्रोत्रिय जान ॥

कुण्डलिया (८)

तुष्ठ रखो गुरुदेव को मती करो नाराज।
असनासन धन भेंटकर वाहन रथ गज बाज ॥
वाहन रथ गज बाज सर्व निज अर्पण कीजे।
व्यवहारिकता गौण समझि निष्ठा अर्पी जे ॥
गोपीनाथ गुरु महर से सरे मनोरथ काज ॥
तुष्ठ रखो गुरुदेव को मती करो नाराज ॥

कुण्डलिया (९)

गुरु आसन शैया तजो कभी न बैठो जाय ॥
गुरु से कपट न कीजिये भेंटो हृदय बिछाय ॥
भेंटो हृदय बिछाय रहो नत मस्तक भाई।
कर साष्टांग प्रणाम जानि ईश्वर की नांई ॥

* टिप्पणी – जीव ईश्वर का भेद, जीव जीव का भेद, जीव तथा जड़ भेद, जड़ों का परस्पर भेद और जड़ ईश्वर का भेद।

गोपीनाथ गुरु भक्ति में लागो शीश झुकाय।
गुरु आसन सैया तजो कभी न बैठो जाय ॥

कुण्डलिया (१०)

गुरु दीक्षा उपदेश ले तासु करे तकरार।
गधा * बने देहान्त में पावे दुःख अपार ॥
पावे दुःख अपार श्वान हो निन्दा करियाँ।
परिभोगत हो कृमी होय मच्छर धन हरियाँ ॥
गोपीनाथ अस शिष्य को बारबार धिक्कार।
गुरु दीक्षा उपदेश ले तासु करे तकरार।

कुण्डलिया (११)

गुरु दाता से गुण गहे पीछे होवे दूर।
बुदिभ्रष्ठ हो दुष्टमति, बने पुनः गढ़ शूर ॥
बने पुनः गढ़शूर पड़चो रह भिष्टामांई।
श्वान होय सौ बार पड़ै दोजख की खाई ॥
गोपीनाथ उस शिष्य को जानो अति बेशूर ॥
गुरु दाता से गुण गहे पींछे होवे दूर।

कुण्डलिया (१२)

प्रभु सेवा में एक फल गुरु सेवा फल दोय ॥
मिले ज्ञान उपदेश यह दीखत फल है सोय ॥

* टिप्पणी – परिवादात्खरो भवति श्वानैभवति निन्दकः।
परिभोक्ता कृमिभवति कीटो भवति मत्सरी ॥

दीखत फल है सोय धर्म की उत्पति द्वारा।
अन्तकरण शुद्धरूप अदृशफल ताहि विचारा ॥
गोपीनाथ गुरु सेवकर पीछा मतना होय।
प्रभु सेवा में एक फल गुरु सेवा फल दोय ॥

कुण्डलिया (१३)

नृपति वैद पण्डित गुरू पंचम मंदिर द्वार।
जो दर्शन करने चले तो कर में कुछ धार ॥
तो कर में कुछ धार हाथ खाली नहिं जाना।
पत्र पुष्प फल यथा शक्ति निज भेंट चढ़ाना ॥
गोपीनाथ शुभ फल मिले कहवे ग्रंथ पुकार।
नृपति वैद पण्डित गुरु पंचम मंदिर द्वार ॥

(गुरु महिमा का अंग समाप्त)

स्तुति प्रार्थना का अङ्ग

❀ प्रारम्भ ❀

कुण्डलिया (१४)

ॐ नाम निज ईश का नामों बीच प्रधान।
अ'उ'म' मिल के हुआ ॐ शब्द उत्थान ॥
ॐ शब्द उत्थान अ कार वैराट विश्वादि।
उ कार हिरण्य गर्भ और वायु तेजादि ॥

मकार ईशादित्यादिक नामहि वाचक जान।
ॐ नाम निज ईश का नामों बीच प्रधान॥

कुण्डलिया (१५)

ॐ सनातन ब्रह्म जप ओ३म् नाम निजमूल।
जप्यां मोक्ष निश्चय मिले रहे न संशय भूल॥
रहे न संशय भूल फेर भव में नहिं आसी।
अभेद युवती धार ॐ स्वयं बन जासी॥
गोपीनाथ सुमिरण करो मिटजावे यम सूल॥
ॐ सनातन ब्रह्म जप ॐ नाम निज मूल॥

कुण्डलिया (१६)

ॐ * अक्षर परब्रह्म का कर सुमरण हरबार।
सब नामों में श्रेष्ठहै कह सद् ग्रंथ पुकार॥
कह सद्ग्रंथ पुकार दृश्य यह सबकुछ जानो।
चेतन जगत प्रपंच ॐ के मांहि पिछानो॥
गोपीनाथ निज ब्रह्म का वाचक ॐ विचार।
ॐ अक्षर परब्रह्म का कर सुमरण हर बार।

कुण्डलिया (१७)

अोणादि मन प्रत्योहो अव धातुहि ओंकार।

* टिप्पणी – ॐ मित्तेतदक्षरमिदघुम् सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतभवि-
द्भविष्यदिति सर्वमोंकार एव। यच्चान्यस्त्रि कालातीतं तदप्योंकार एव।

ओमिति ब्रह्म ओमितीदं व्यापक सर्वाधार ॥
व्यापक सर्वाधार ॐ ही सब कुछ जानो ।
आत्मज्ञान के निमित पाद्रि का क्रिया विधानो ॥
ब्रह्म आतमा और प्रकृति आकार उकार मकार ।
गोपीनाथ चिन्तन करो युक्ति अभेद उर धार ॥

कुण्डलिया (१८)

ओमाक्षर परब्रह्म कर चिन्तन अर्थ सहीत ।
परम धाम की प्रापती हो आशक्ति रहीत ॥
हो आशक्ति रहीत लक्षणा से लक्ष्य पावो ।
दुख अज्ञान हो नष्ट फेर भवमें नाँ आवो ॥
गोपीनाथ सर्व नामों में चेतन ओमातीत ।
ओमाक्षर परब्रह्म कर चिंतन अर्थ सहीत ॥

(स्तुति प्रार्थना का अङ्ग समाप्त)

नाम महिमा का अंग

❀ प्रारम्भ ❀

कुण्डलिया (१९)

रामहि इक परब्रह्म है राम परम तप भाय ।
परम तत्व है राम ही तारक मंत्र कहाय ॥
तारक मंत्र कहाय राम ही सर्वाधारा ।
जड़ चेतन भिन्न नांय राम का सकल पसारा ॥

गोपीनाथ भज राम को भव बंधन कट जाय।
रामहि इक परब्रह्म है राम परम तत भाय॥

कुण्डलिया (२०)

राम नाम चिन्तन करो पलपल अवसर जाय।
श्वास अमोलक जाय फिर आवे या नहिं आय॥
आवे या नहिं आय हरी का नाम उचारो।
तजि सकाम इच्छा निष्काम वासना धारो॥
गोपीनाथ लहि मोक्षपद बहुरि जन्म नहिं पाय।
राम नाम चितन करो पल २ अवसर जाय॥

कुण्डलिया (२१)

रा अक्षर के उच्चरे अघ भय का हो नाश।
मा अक्षर पट देत है छूटे भवजल त्रास॥
छूटे भवजल त्रास धरे नहिं बहुरि शरीरा।
श्री रामेति परम जप जानो तारक मंत्र अक्षिरा॥
गोपीनाथ महा मंत्र यह जपिये स्वांस उस्वास।
रा अक्षर के उच्चरे अघ भय का हो नाश॥

कुण्डलिया (२२)

रामहि आतम ब्रह्म है वास्तव में बे नाम।
प्रण २ मांही रम रह्यो राम सर्व सुख धाम॥
राम सर्व सुख धाम तासु का सुमरण॥
छूटे सब दुख द्वन्द्व होय नहि जन्मो मरण॥

गोपीनाथ भज राम को होकर के निष्काम ।
रामहि आतम ब्रह्म है वास्तव में बे नाम ॥

कुण्डलिया (२३)

तत्वम् असि महावाक्य लख राम ब्रह्म हो मान ।
सब नामों में श्रेष्ठ बस एक राम को जान ॥
एक राम को जान है चेतन शुद्ध अखण्डा ।
ज्ञान स्वरूप अनन्त पूर्ण है स्वयं प्रचण्डा ॥
गोपीनाथ अद्वैत में जप कौन सा नाम ।
तत्वम् असि महावाक्य लख राम ब्रम्ह ही मान ।

(नाम महिमा का अङ्ग समाप्त)

सतसंग महिमा का अंग

प्रारम्भ

कुण्डलिया (२४)

पर ब्रह्म की प्राप्ति का साधन है सतसंग ।
सच्चिदानन्द स्वरूप नित नहि अनर्थ को अंग ॥
नहि अनर्थ को अंग जगत मे सतसंग सारा ।
कर सन्तों का संग होंय भवसागर पारा ॥
गोपीनाथ सतसंग से दृश्य एक निः संग ।
पर ब्रम्ह की प्राप्ति का साधन है सतसंग ॥

कुण्डलिया (२५)

चन्दन शीतल जगत में चन्दन से शशि जान।
शीतल इनसे भी अधिक संगति साधू मान॥
संगति साधू मान कीट भृंग ज्यों पलटावे।
अली गलीका नीर गंग मिल गंग कहावे।
गोपीनाथ पातक झड़े होवे आतम ज्ञान।
चन्दन शीतल जगत में चन्दन से शशि जान॥

कुण्डलिया (२६)

परम लाभ नर देह का बिन सत संग न होय।
मृदु वाणी सन्तोष सुख अन्त मोक्ष दे सोय॥
अन्त मोक्ष दे सोय द्वैत के भाव मिटावे।
जीव ब्रह्म है एक भेद का किल्ला ढावे।
गोपीनाथ सतसंगकर सतसंग सम नहिं कोय।
परम लाभ नर देह का बिन सतसंग न होय॥

कुण्डलिया (२७)

गंग पाप शशि ताप औ सुरतरु दारिद खोय।
पाप शाप अरु दीनता सतसंग चारों खोय॥
सतसंग चारों खोय शान्ति सुख ज्ञान बढ़ावे।
मिटा देय त्रय ताप द्वैत के भाव नशावे॥
गोपीनाथ सतसंग से लोहा कंचन होय।
गंग पाप शशिताप औ सुरतरु दारिद खोय॥

कुण्डलिया (२८)

साधू * का संसार में दर्शण पुण्य महान ॥
तीरथ व्रत से भी अधिक साधु संग फल जान ॥
साधु संग फल जान तीर्थ फल पीछे देवे ।
साधु संग फल तुरत सुफल जीवन कर लेवे ॥
गोपीनाथ सतसंग से होवे आतम ज्ञान ।
साधू का संसार में दर्शण पुण्य महान ॥

कुण्डलिया (२९)

साधन युत साधू सदा करे धर्म उपदेश ।
निर्मल जिनके वचन हैं नहीं स्वार्थ लवलेश ॥
नहीं स्वार्थ लवलेश, संशय भ्रम नाशै सारा ।
ज्यों सूरज के उदय होत नाशै अंधियारा ॥
गोपीनाथ परमार्थ हित धरे सन्तजन भेष ॥
साधन युत साधू सदा करे धर्म उपदेश ॥

कुण्डलिया (३०)

क्रोध लोभ नहिं मोहमद, सन्त सदा निष्काम ।
द्वंद्व जिन्हें व्यापे नहीं, प्रमुदित आठों याम ॥
प्रमुदित आठोंयाम तिणारो सत्संग कीजे ।
कर वचनामृत पान लाभ जीवन का लीजे ॥

* टिप्पणी – साधुनां दर्शनं पुण्यं तीर्थ भूताहि साधवः ।
कालेन फलते तीर्थं सद्यः साधु समागमः ॥

गोपीनाथ उण सन्त को बारम्बार प्रणाम।
क्रोध लोभ नहि मोहमद सन्त सदा निष्काम॥
(सत्संग महिमा का अङ्ग समाप्त)

❀ अथ ❀

भक्ति का अंग प्रारम्भ

कुण्डलिया (३१)

भज * सेवायाम धातु से भक्ति अर्थ पहिचान।
ईश भजन अरु अर्चना करो निरन्तर ध्यान॥
करो निरन्तर ध्यान ओ३म आतम चितधारो।
भक्ति कर्म के संग ज्ञान निर्वाण विचारो॥
गोपीनाथ धारण करो भक्ति और निर्वान।
भज सेवायाम धातु से भक्ति अर्थ पहिचान॥

कुण्डलिया (३२)

उत्तम मध्यम कनिष्ठ यों अधिकारी त्रय जान।
त्योंही तीन प्रकार की भक्ती भी लो मान॥
भक्ती भी लो मान भेदत्रय सबके जानो।
इमि यह नवधाभक्ति शास्त्र सम्मत पहिचानो॥
गोपीनाथ धारण करो पावो पद निर्वान।
उत्तम मध्यम कनिष्ठ यों अधिकारी त्रय जान॥

* ॐ भक्ति भज सेवायाँ तथा नाम सुमरणं मोक्ष प्राप्नोति।

कुण्डलिया (३३)

स्वयं सहित सबको लखे जो जन ब्रह्म समान ।
सोही उत्तम भक्ति है पुनि विभेद त्रय जान ।।
पुनि विभेद त्रय जान परीक्षित श्रवणहि धारी ।
कीर्तन को शुकदेव स्मरण प्रहलाद विचारी ।।
गोपीनाथ ब्रह्म सत्य है मिथ्या जग हो भान ।
स्वयं सहित सबको लखे जो जन ब्रह्म समान ।।

कुण्डलिया (३४)

स्वामी सेवक भावना हो हिरदा के मांय ।
सोही मध्यम भक्ति है सन्त ग्रंथ यों गाय ।।
सन्त ग्रंथ यों गाय दास हनुमान विचारी ।
अर्जुन सख्य बली ने आत्म समर्पण धारी ।।
गोपीनाथ यों मध्यमा भक्ति कहि समझाय ।
स्वामी सेवक भावना हो हिरदा के मांय ।।

कुण्डलिया (३५)

धातु पासानहि मूर्ति का धरते जो नित ध्यान ।
सोही कनिष्ठ भक्ति है कहते ग्रंथ बखान ।।
कहते ग्रंथ बखान लक्ष्मि पद पूजा कीनो ।
वन्दन श्री अक्रूर अर्चना पृथु उर लीनो ।।
गोपीनाथ वर्णन करे नवधा भक्ति बखान ।
धातु पासानहि मूर्ति का धरते जो उर ध्यान ।।

कुण्डलिया (३६)

नवधा भक्ती भक्त युत दीन्ही प्रगट बताय ।
सो तो सगुंण भक्ति है, निर्गुंण कहुँ समझाय ।।
निर्गुंण कहुँ समझाय सुनो सज्जन धर ध्याना ।
मानव भक्ति निर्वाण यों गीता करे बखाना ।।
सोहं सोहं जाप जप यो ऽसावादित्य पुरुष सोय ।
गोपीनाथ आतम लखो द्वैत भर्मना खोय ।।

कुण्डलिया (३७)

त्रिगुण भेद से भक्ति त्रय सुनलेना सब कोय ।।
राग द्वेष अरु क्रोध युत तामस भक्ती सोय ।।
तामस भक्ती सोय दम्भ मात्सर्य बढ़ावे ।
करे कामना धार सो राजस भक्ति कहावे ।।
अघ नाशन संकल्पकर अर्पे श्री भगवान ।
सो ही सात्विक भक्ति है गोपीनाथ लों जान ।।

कुण्डलिया (३८)

संध्या सत्य स्वाध्याय अरु तत्व ज्ञान उर धार ।।
सदाचार घट में दया, सतसंग पर उपकार ।।
सतसंग पर उपकार यज्ञ सुमिरण तप दाना ।
क्षमा अहिंसा आर्जव भक्ति का साधन माना ।।
गोपीनाथ कुरीति तज अपना जन्म सुधार ।
संध्या सत्य स्वाध्याय अरु तत्वज्ञान उरधार ।।

कुण्डलिया (३९)

जितने साधन मोक्ष के तिन में भक्ति * प्रधान ।
आत्म चिन्तवन हरिभजन भक्ती से पहिचान ।
भक्ती से पहिचान स्वरूपहि का हो भाना ।।
लखै ब्रह्म साक्षात् भक्ति निर्गुण सो जाना ।।
गोपीनाथ धारण किये पावे पद निर्वान ।।
जितने साधन मोक्ष के तिन में भक्ति प्रधान ।।

(भक्ति का अंग समाप्त)

❀ अथ ❀

धर्म का अंग प्रारम्भ

कुण्डलिया (४०)

धर्म शब्द ध्र धातु से कह सदग्रंथ बखाण ।
तासु अर्थ धारण करन किया विश्व निर्माण ।।
किया बिश्व निर्माण धर्म है चार प्रकारा ।।
वर्णाश्रम अरुसाधन कहिये पुनि सामान्य विचारा ।।
गोपीनाथ सामान्य को मानव धर्म लो जाण ।
धर्म शब्द ध्र धातु से कह सदग्रंथ बखाण ।।

❀ टिप्पणी – मोक्ष कारणं सामग्र्यां भक्ति रेव गरीयसी ।
स्वस्वरूपानु संधानं भक्तिरित्यभिधीयते ।
स्वात्म तत्वानुसंधानं भक्ति रित्य प. जगुः ।।

कुण्डलिया (४१)

दश लक्षण हैं धर्म के कहूँ प्रकट समझाय।
जो इनको धारण* करे सो मानव कहलाय ।।
सो मानव कहलाय धृती क्षमा दम जानो।
शौच अचौर्य इन्द्रियदम धी विद्या पहिचानो ।।
गोपीनाथ अक्रोध अरु दसवाँ सत्य कहाय।
दश लक्षण ये धर्म के कहूँ प्रकट समझाय ।।

कुण्डलिया (४२)

मिले आठ सुख धर्म से निश्चय लीजे जान।
राज्य सम्पदा भोग अरु बहु ऐशवर्य पिछान ।।
बहु ऐशवर्य पिछान जन्म उत्तम कुल मांई।
दीर्घायुः नैरोग्य, चतुरता सुन्दर ताई ।।
गोपीनाथ यों नीति के कहवे ग्रंथ बखान।
मिले आठ सुख धर्म से यह निश्चय लो जान ।।

कुण्डलिया (४३)

धारण करिये धर्म को राखि हिये विश्वास।
बुद्धिमान संग्रह करे तजे न मन से आश ।।
तजे न मन से आश धर्म से सब सुख जानो।
मिले मोक्ष सुख शान्ति मित्र धर्महि कर मानो ।।

* टिप्पणी – धारणा धर्ममित्याहु धर्मो धर्यते प्रजा।
यतस्या धार्ण संयुक्तं सः धर्म इति निश्चयः।

गोपीनाथ रक्षाकरे करे कष्ट सब नाश।
धारण करिये धर्म को राखि हिये विश्वास ॥

कुण्डलिया (४४)

जो धर्म धारण करे होवे पूज्य प्रवीन।
धन विद्या वैभव मिले कभीन रहवे दीन ॥
कभी न रहवे दीन राज्य सुन्दरता पावे ॥
उत्तम कुल सम्मान मोक्ष को सहज सिधावे।
गोपीनाथ अवगुण तजो कर कुरीतियां क्षीण ॥
जो धर्महि धारण करे होवे पूज्य प्रवीण ॥

कुण्डलिया (४५)

सत्य अहिंसा मृदुवचन त्याग तपस्या जान।
अपरिग्रह अस्तेय पुनि ब्रह्मचर्य पहिचान ॥
ब्रह्मचर्य पहिचान दान यग सेवा पूजा।
ईश्वर सन्त समान रती मत जाने दूजा ॥
सदाचार स्वरूप कह गोपीनाथ बखान।
सत्य अहिंसा मृदुबचन त्याग तपस्या जान।

कुण्डलिया (४६)

दया प्राणियों पर रखे सोहं शब्द विचार।
शुचि सम दम श्रद्धा क्षमा निर अभिमान अपार ॥
निर अभिमान अपार धैर्यता दृढ़ मन मांई।
थाय ज्ञान वैराग्य प्रसन्नता हिय में मांई ॥

गोपीनाथ सद्गुरु कहे सज्जन लीजे धार ।
दया प्राणियों पर रखे सोहं शब्द विचार ॥

(धर्म का अंग समाप्त)

❀ अथ ❀

विद्या का अंग प्रारम्भ

कुण्डलिया (७४)

विद्या मनुज स्वरूप है गुप्त द्रव्य यहि जान ।
भोग सुयश अरु सर्व सुख विद्या से पहिचान ॥
विद्या से पहिचान विद्या गुरु का गुरु माना ।
पर स्थल बंधु समान समझिये देव महाना ॥
गोपीनाथ विद्या बिना नर है पशू समान ।
विद्या मनुज स्वरूप है गुप्त द्रव्य यहि जान ॥

कुण्डलिया (८४)

विद्या बिन नर अंध है भटके ठोकर खात ।
नहीं पढायो पुत्र को धिक है पितु अरु मात ॥
धिक है पितु अरु मात कहीं नहि शोभा पाता ।
ज्यों हंसो में काग बैठकर स्वयं लजाता ॥
गोपीनाथ विद्या पढ़ो सुधरे जीवन भ्रात ॥

कुण्डलिया (४६)

माता ज्यों रक्षा करे और पिता वत प्यार।
नारी वत दे सर्व सुख सर्व शोक दुख टार॥
सर्व शोक दुख टार कीरती यश फैलावे।
सच्चे मित्र समान विद्याही बंधु कहावे॥
गोपीनाथ विद्या पढे शोभा बढ़े अपार।
माता ज्यूं रक्षा करे और पितावत प्यार॥

कुण्डलिया (५०)

गोपीनाथ जिस पुरुष में नहिं विद्या तप दान।
धर्म शीलता गुण नहीं जीवन विरथा जान॥
जीवन विरथा जान मनुज वो पशू समाना।
घोर निरादर सहे कष्ट भोगे वह नाना॥
तज प्रमाद आलस अवसि पढ़िये विद्या भ्रात।
विद्या सम नहिं देवता कहवे गोपीनाथ॥

कुण्डलिया (५१)

विद्या भेदा भेद से जानो दोय प्रकार।
अपरा परा ये नाम है लक्षण ये उरधार॥
लक्षण ये उरधार वेद चारों को जानो।
शिक्षा कल्प निरुक्त छन्द ज्योतिष पहिचानो॥
भेद लोक परलोक का अपरा मांहि निहार।
विद्या परा जासे कह लखे ब्रह्म नित्य निरधार॥

* अथ *

पतिव्रता का अंग प्रारम्भ

कुण्डलिया (५२)

पति सेवा सबसे बड़ी गोपीनाथ यों गाय।
जप तप तीरथ दान तप कोई भी सम नाॅय॥
कोई भी सम नाॅय धरा परिकम्मा जानो।
ब्राह्मण संत अतिथ सेवा भी हलकी मानो॥
पति सेवा के तुल्य है कला सोलवीं नांय।
पति सेवा सबसे बड़ी गोपीनाथ यों गाय॥

कुण्डलिया (५३)

पति ही गति है बाम को पति ही जानो प्राण।
पति ही तन धन सम्पदा कह सदग्रंथ बखाण॥
कह सदग्रंथ बखाण पतिव्रत व्रत को धारो।
अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष पति हेतु विचारो॥
गोपीनाथ पति भक्ति से पत्नी का कल्याण।
पति ही गति है बाम की पति ही जानो प्राण॥

कुण्डलिया (५४)

पति ही तिय का बन्धु है गती पती से होय।
पती देव पति ही गुरू रमा वचन है सोय॥

रमा वचन है सोय पती सम और न दूजा।
पति ईश्वर ही जान करो नित पति की पूजा ।।
गोपीनाथ पति से अधिक और गुरू नहिं कोय।
पति ही तिय का बन्धु है गती पती से होय ।।
यथा – पतिर्बन्धुः गतिर्भर्त्ता दैवतं गुरुरेव चः

कुण्डलिया (५५)

जप तप व्रत उपवास अरु पुण्य बहुत विधि दान।
पत्नी को पति भक्ति बिन सब है धूल समान ।।
सब है धूल समान पती व्रत धर्महि धारो।
पति ईश्वर सम जान सेवकर जन्म सुधारो ।।
गोपीनाथ कीरति बढ़े करे सकल सम्मान।
याते पति सेवा करो पूजे सकल जहान ।।

कुण्डलिया (५६)

नशा अवज्ञा दुष्टता परघर करे निवास।
अन्य प्रेम निद्रा अधिक ये षट दोष हैं खाश ।।
ये षट दोष हैं खाश बहिन तुम उर से त्यागो।
पति ईश्वर सम जान नित्य सेवा में लागो ।।
गोपीनाथ दोषहि तजो करके नित अभ्यास।
नशा अवज्ञा दुष्टता परघर करे निवास ।।

(पतिव्रता का अङ्ग समाप्त)

❀ अथ ❀

अष्टांग योग का अंग

❀ प्रारम्भ ❀

कुण्डलिया (५७)

आठ अंग हैं योग के कर देखा निरधार।
यम नियमरु आसन लखो प्रत्याहार निहार ॥
प्रत्याहार निहार के प्राणायामहि साधो।
पूर्ण धारणा धार ध्यान अन्तर आराधो ॥
सहज समाधी साधलो गोपीनाथ गुरुधार।
आठ अंग हैं योग के कर देखा निरधार ॥

कुण्डलिया (५८)

पांच अंग यमके कहूं सजन सुनो धर ध्यान।
सत्यास्तय अपरिग्रह ब्रह्मचर्य अहिंसा जान ॥
ब्रह्मचर्य अहिंसा जान ध्यान पाचों पर देना।
इन पांचों को साधि योग पथ में पग देना ॥
गोपीनाथ संचय रहित वही अपरिग्रह जान।
पांच अंग यम के कहूँ सजन सुनो धर ध्यान ॥

कुण्डलिया (५९)

अब नियम वर्णन करूँ पांच प्रकारहि जान।

शौच तोष स्वाध्याय तप, ईश्वर प्रणिधान ॥
ईश्वर प्रणिधान शौच तन मन शुद्ध करना ।
तोष कामना रहित या तृष्णा मन से तजना ॥
तप तन त्याना अरु भजन स्वाध्याय लो जान ।
मन संजोना ईश में ईश्वर प्राणीधान ।

कुण्डलिया (६०)

जिस मुद्रा से बैठ के करे योग अभ्यास ।
ताको आसन * कहत हैं सो चौरासी खाश ॥
सो चौरासी खाश, मुख्य तामें दो जानो ।
सिद्ध और पद्मासन ताके नाम बखानो ॥
गोपीनाथ आगे करूँ विधि विधान प्रकाश ।
जिस मुद्रा में बैठ के करे योग अभ्यास ॥

कुण्डलिया (६१)

बायें पाँव को एड़ी से मूलके बन्ध लगाय ।
दायें पांव की एड़ी से उपस्थ इन्द्रि दबाय ॥
उपस्थ इन्द्रि दबाय तले ऊपर हो एडी ।
हृदय से अंगुल चार राखना ऊंची ठोडी ॥
विषयों से इन्द्रिय हटा भृकुटि दृष्टि ठहराय ।
मोक्ष मार्ग का पथ सहीं गोपीनाथ बताय ॥

* टिप्पणी - सौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान साधकर तथा नियमोंपर स्थिर होकर बैठना हो सुखासन है ।

कुण्डलिया (६२)

बायाँ पैर उठाके दायें पर ठहराय।
त्योही दांये पांव को बांये ऊपर लाय॥
बांये ऊपर लाय रीढ सीधी कर थावे।
उभय अंगूठे पकड़ चिबुक छाती चिपकावे॥
दृष्टि रखे नासाग्र पर गोपीनाथ बताय।
पद्मासन यों साधिये बायाँ पैर उठाय॥

कुण्डलिया (६३)

आसन के दृढ होन से स्वासोस्वास रुक जाय।
सोही प्राणायाम है योग शास्त्र बतलाय॥
योग शास्त्र बतलाय सो कहिये तीन प्रकारा।
अन्तर बाहिर रथम समझ गुरुमुख से प्यारा॥
पूरक स्वासा खैंचना कुंभक रोको मांय।
रेचक बहिर निकालना गोपीनाथ कथगाय॥

कुण्डलिया (६४)

योग अंग अब पांचवां सुनिये प्रत्याहार *।
शब्द स्पर्श रूपादि हैं इन्द्रि विषय व्यवहार॥
इन्द्रि विषय व्यवहार ताहि से उन्हें हटाओ।
चित्त वृत्ति को खैंचिके द्रष्टा में ठहराओ॥

* स्वविषय संप्रयोगे चित्तस्वरूपानुसार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः।

गोपीनाथ गुरु की कृपा कहा मती अनुसार ।
योग अंग अब पांचवां सुनिये प्रत्याहार ॥

कुण्डलिया (६५)

छठा अंग है धारणा १ सुनिये चित्त लगाय ।
अन्तराय तज वृत्ति की स्थिती जब हो जाय ॥
स्थिती जब होजाय ईष्ट मांही लग जाना ।
सोही धारणा जान संत सदग्रंथ बखाना ॥
गोपीनाथ ईष्ट आतमा शुद्ध चेतन कहलाय ।
छठा अंग है धारणा सुनिये चित्त लगाय ॥

कुण्डलिया (६६)

अब आगे सुन लीजिये अंग सातवॉं ध्यान ।
अन्तराय तज ब्रह्म में वृत्ति प्रवाह बखान ॥
वृत्ति प्रवाह बखान ब्रह्म अद्वैत अरूपा ।
स्व स्वरूप के मॉय वृत्ति नित हो तद्‌रूपा ॥
गोपीनाथ यहि ध्यान है कहवे ग्रंथ बखान ।
अब आगे सुन लीजिये अंग सातवॉं ध्यान ॥

कुण्डलिया (६७)

चित स्थिर यों होजाय अरु रहेन निजका भान ।
धेय रूप हो ध्यान तो वही समाधी २ जान ॥

टिप्पणी १–तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्
२–तदैवार्थमात्र निर्भासं स्वरूप सून्यमिव ससाधि ।

वही समाधी जान सो कहिये दोय प्रकारा।
तासु नाम सविकल्प और निर विकल्प विचारा॥
वृत्ती अन्तः करण की ब्रह्म मांहि तदकार।
गोपीनाथ समाधि सो अष्टम अंग विचार॥
(अष्टांग योग का अंग समाप्त)

* अथ *

मन का अंग प्रारम्भ

—— ❀ ——

कुण्डलिया (६८)

सुख दुख * लाभालाभ मन माने हर्ष रु शोक।
पुन्नः शुभाशुभ पाप पुन नर्क सर्ग के लोक॥
नर्क सर्ग के लोक ताहि को मन पहिचनो।
पंचतत्व सात्विक भागों से मन की उत्पति जानो॥
मन दर्पणवत स्वच्छ है गोपाल विषय से रोक।
सुख दुख लाभालाभ मन माने हर्ष रु शोक॥

कुण्डलिया (६९)

अर्जुन से श्रीकृष्ण ने कही बात समझाय।
मन चंचल दुर्निग्रहता में है संशय नाय॥
में है संशय नाय चंचल औ दर्पण नाई।

टिप्पणी ❀ सुखः दुखः उपलब्धि साधनम् इन्द्रियम् मनः।

कर वैराग्याभ्यास कीजिये वश में भाई ॥
गोपीनाथ मन विषय संग चंचल गति होजाय ।
अर्जुन से श्रीकृष्ण ने कही बात समझाय ।

कुण्डलिया (७०)

गोपीनाथ मन पलक में बने राव दरबार ।
पल में रंक अनाथ बन कहलावे लाचार ॥
कहलावे लाचार बने कब सन्त विरागी ।
तथा कामिनी संग बने कामी अनुरागी ॥
मन १ ही माया रूपधर रच्यो सकल संसार ।
गोपीनाथ मन पलक में बने राव दरबार ॥

कुण्डलिया (७१)

शुद्धाशुद्ध २ द्वै भेद से मन भी द्विविध भाय ।
अनन्त कामना युक्त जो अशुद्ध मन कहलाय ॥
अशुद्ध मन कहलाय सोही भव में दुख पावे ।
सर्व कामना तजे वही मन शुद्ध कहावे ॥
मनोमात्रमिदं द्वैतम् कहते सन्त पुकार ।
गोपीनाथ समष्टि मनहिसे रचा सकल संसार ।

टिप्पणी १— न ह्यस्त्यविद्या मनसोऽतिरिक्त मनोह्यविद्या भव बन्धु: हेतु: । तस्मिन्विनष्टे सकलं विनष्ठं विजृम्भितेऽस्मिन्सकल विजृम्भते॥
२ ॥ मनोहि द्वि विधं प्रोक्तं शुद्धम् चाशुद्ध मेव च । अशुद्धं काम संकल्पं शुद्धम् काम विवर्जितम् ॥

कुण्डलिया (७२)

लख चौरासी * योनि में मन ले जावन हार।
मन भरमावत जीव को पावे दुःख अपार॥
पावे दुःख अपार मोक्ष बंधन का कारण।
होकर विषयाशक्त करे भव बंधन धारण॥
गोपीनाथ निर्विषय मन पाय मोक्ष ततसार।
लख चौरासी योनि में मन लेजावन हार॥

टिप्पणी * मनएव मनुष्याणां कारण बंध मोक्षयोः।
बाधाम विषयासक्तमुत्यै निर्विषयस्मृतम्॥

कुण्डलिया (७३)

चार खान वर्णन करूं स्मृति के अनुसार।
पशु हिंसक मृग राक्षस और पिचाश निहार॥
और पिशाच निहार मनुज जानो पहिचानो।
झिल्ली से उत्पन्न जरायुज उनको जानो॥
गोपीनाथ सच कहत है निश्चय लो उरधार।
चारखान वर्णन करूं स्मृति के अनुसार॥

टिप्पणी – यहाँ मनुस्मृति के आधार पर चार खान चौरासी लाख योनियों के सम्बन्ध में कुण्डलियाँ दे रहें हैं

कुण्डलिया (७४)

अब अण्डज वर्णन करूं सुनो सजन धर ध्यान।
धरा और जल में रहे सो अण्डज पहिचान॥

सो अण्डज पहिचान पक्षि अरु सांप कहावे।
मकर मत्स्य कछुए आदिक अण्डज कहलावे॥
गोपीनाथ सत कहत है स्मृति यों करे बखान।
अब अण्डज वर्णन करूं सुनो सजन धर ध्यान॥

कुण्डलिया (७५)

श्वेदज खानी अब सुनो संशय रखो न कोय।
गर्मी से पैदास्त हो श्वेदज प्राणी सोय॥
श्वेदज प्राणी सोय डांस अरु मच्छर जानो।
जूं मक्खी खटमल आदिक जीवों को मानो॥
गोपीनाथ सच कहत है इसमें झूंट न होय।
श्वेदज खानी अब सुनो संशय रखो न कोय॥

कुण्डलिया (७६)

अब आगे वर्णन करूं उद्भिज चौथीखान।
बीज वा टहनीं से लगे सो उद्भिज पहिचान॥
सो उद्भिज पहिचान फोड़ पृथ्वी उपजावे।
पेड़ झाड़ झंकाड़ लता औषधि कहलावे॥
गोपी चारों खान से योनि चौरासी जान।
अब आगे वर्णन करूं चौथी उद्भिज खान॥

टिप्पणी – मनु के समान किसी कवि ने भी ८४ लाख योनियों के सम्बन्धमें कहा है:—नौ जलचर दश गगनचर, ग्यारा कृमि बन बीस। चौरासी के फेर में चार मनुज पशु तीस।

अथ

संसार मिथ्या का अंग

* प्रारम्भ *

कुण्डलिया (७७)

गोपीनाथ संसार यह रजु भुजंग अनुसार ।
मिथ्या भुजंग से भ्रमित कांपे मनुज अपार ।।
कांपे मनुज अपार रज्जु जब तक ना जाने ।
होय रज्जु का ज्ञान सर्प नहिं मिले ठिकाने ।।
जब तक न हो ज्ञान उर तब तक घोर अंधार ।
गोपीनाथ संसार यह रजु भुजंग अनुसार ।।

कुण्डलिया (७८)

गोपीनाथ संसार यह मिथ्या स्वप्न समान ।
बने भिखारी नींद में ज्यों भूपति धनवान ।।
ज्यों भू पति धनवान नहीं जबतक वह जागे ।
जगत भिखारी रूप भूप का पता न लागे ।।
जो लौं जगेन ब्रह्म में होय जगत का भान ।
गोपीनाथ संसार यह मिथ्या स्वप्न समान ।।

कुण्डलिया (७९)

मरु भूमी में धूप से ज्यों जलवत दिखलाय ।

सो मिथ्या जल जलनहीं जो दे प्यास मिटाय ॥
जो दे प्यास मिटाय जगत यों असत्य जानो ।
जो अविज्ञ मतिहीन जगत ने सत्य बखानो ॥
ब्रह्म आतम के ज्ञान से यह जग सर्व विलाय ।
गोपीनाथ निज रूप लख दे जग वाद भुलाय ॥

कुण्डलिया (८०)

गोपीनाथ अज्ञान से जग प्रत्यक्ष लखाय ।
ज्यों गह्वर मठ कोटरी अंधकार दर्शाय ॥
अंधकार दर्शाय तिमिर दीपक से भागे ।
आत्मज्ञान त्यों होत जगत का पता न लागे ॥
अधिष्ठान तू आप है नहीं जगत तुझ मांय ।
गोपीनाथ अज्ञान से जग प्रत्यक्ष लखाय ।

कुण्डलिया (८१)

गोपीनाथ इस जगत का अधिष्ठान तू आप ।
ज्यों शिशु कल्पति भूत से पावे अति सन्ताप ॥
पावे अति सन्ताप भर्म से दूजा भासे ।
जब हो निज का ज्ञान भर्मना उर से नाशै ॥
जगत असत तू सत्य यह कथन वेद का साफ ।
गोपीनाथ इस जगत का अधिष्ठान तू आप ॥

(जगत मिथ्या का अंग समाप्त)

अथ

जिज्ञासु प्रबोध का अङ्ग

* प्रारम्भ *

कुण्डलिया (८२)

सहस बहत्तर नाड़ियाँ उनमें दश परधान ।
इड़ा पिंगला सुषमणा मुख्य तीन लो जान ।।
मुख्य तीन लो जान सुनो तेहि ठौर ठिकाना ।
बायाँ स्वर है इड़ा चन्द्रस्वर ताहि बखाना ।
दायाँ स्वर है पिंगला सूर्य नाम कर चीन ।
दोनों बिच है सुषमणा योगी लखे प्रवीन ।।

कुण्डलिया (८३)

प्राण निवासा हृदय में अपान गुदा पहिचान ।
समान नाभी में रहे उदान कण्ठ बखान ।।
उदान कण्ठ बखान व्यान व्यापक घट सारे ।
नाग डकार रु कूर्म नेत्र के पलक उघारे ।।
कृकल छींक अरु देवदत्त बसत जम्हाई मान ।
बसत मृतक तन धनंजय गोपीनाथ लो जान ।।

कुण्डलिया (८४)

षट चक्कर में कहत हूं सुनिये देकर ध्यान ।

प्रथमहि मूलाधार है स्वाधिष्ठान बखान ॥
स्वाधिष्ठान बखान तृतिय मणिपूरक भाई ।
अनहद विशुद्ध आज्ञा गोपीनाथ कहाई ॥
देवशक्ति अरु बीज जप नक्शे से लो जान ।
षट चक्कर में कहत हूं सुनिये देकर ध्यान ॥

कुण्डलिया (८५)

हकार स्वासा से बने स कार स्वांस प्रवेश ।
हंसो सोहं मंत्र जप करता जीव हमेश ॥
करता जीव हमेंश रात अरु दिन के मांई ।
सहस इकीस छः सौ यों जप संख्या गाई ॥
अजपा जप स्वतः जपे रहे न पाप कलेश ।
हकार स्वासा से बने स कार स्वांस प्रवेश ॥

कुण्डलिया (८६)

मैथुन आठों जो तजे ब्रह्मचारी कहलाय ।
श्रवण स्मरण अरु कीर्तन चितवन मनके मांय ॥
चितवन मन के मांय बात एकान्त में करनी ।
यत्न संकल्प रु प्राप्ति अष्ट बातें ये तजनी ॥
गोपीनाथ भज राम को मत मनको भटकाय ।
मैथुन आठों जो तजे ब्रह्मचारी कहलाय ॥

कुण्डलिया (८७)

गोपीनाथ नौ खण्ड का सुनलो स्पष्ठ विधान ।

वरुण जीभ अरु इन्द्र कर सोम त्वचा पहिचान ।।
सोम त्वचा पहिचान ब्रह्म श्रवणन में भाई ।
भगस्थ चक्षु बखान नाग खंड घ्राण कहाई ।।
भरत शीश अरु ताम्र गुद चरण कसेरू जान ।
गोपीनाथ नौ खण्ड का सुनलो स्पष्ट विधान ।।

कुण्डलिया (८८)

कहता सात समुद्र में अरु उनके अस्थान ।
सुरा दशम द्वारे बसे घृत श्रवणन पहिचान ।।
घृत श्रवणन पहिचान ईख है नेत्र निवासा ।
दधि नासिका निवास शहद मुख द्वारे वासा ।।
क्षीर हृदय अस्थान है खार अमी है द्वार ।
गोपीनाथ वर्णन करे ग्रंथों के अनुसार ।।

कुण्डलिया (८६)

सतगुरु समरथ आप हैं सब कुछ जानन हार ।
सुख दुख पावे कौन सो कहो बात तत्सार ।।
कहो बात तत्सार मार कुण यम को खावे ।
कर्ता भोक्ता कौन कौन चौरासी पावे ।।
गोपीनाथ की वीनती संशय करो निवार ।
सतगुरु समरथ आप हैं सब कुछ जानन हार ।।

कुण्डलिया (६०)

सामान्य चेतन ब्रह्म का अक्ष अविद्या लीन ।

साधिष्ठान आभाष जो सुख दुख में प्राधीन ।।
सुख दुख में प्राधीन दुःख चौरासी पावे ।
भोगे कष्ट अपार तबहि गुरु शरणै आवे ।।
गोपीनाथ सब भ्रम मिटे निज स्वरूप ले चीन ।
सामान्य चेतन ब्रह्म का अक्ष अविद्या लीन ।।

टिप्पणी – अक्ष = प्रतिबिम्ब ।
साधिष्ठान = अधिष्ठान सहित ।

कुण्डलिया (९१) प्रश्न–

सतगुरु किसको होत है अहं ब्रह्म यह ज्ञान ।
नहि जानू मैं सर्वथा कहिये कृपा निधान ।।
कहिये कृपा निधान जानि चरणों का चाकर ।
करदो संशय चूर गुरु मुझको समझाकर ।।
गोपीनाथ की वीनती कहो स्वरूप बखान ।
सतगुरु किसको होत है अहं ब्रह्म यह ज्ञान ।।

कुण्डलिया (९२) उत्तर–

इक अज्ञान द्वै आवरण तृतिय भ्रान्ती जान ।
दो प्रकार का ज्ञान है प्रोक्षाप्रोक्ष बखान ।।
प्रोक्षा प्रोक्ष बखान षष्ट है शोक-विनाशा ।
सप्तम हर्ष अपार जान कर निश्चय खाशा ।।
है आभाष की अवस्था चेतन की मत जोय ।
गोपीनाथ अहम् ब्रह्म का ज्ञान इहाँ से होय ।।

(जिज्ञासु बोध का अंग समाप्त)

अथ

आत्मानुभव का अंग

* प्रारम्भ *

कुण्डलिया (६३)

न्याय शासतर का कथन ईश्वर वाद बखान ।
पुनः मिमांसा शास्त्र में कर्मवाद लो जान ॥
कर्मवाद लो जान वैशेषिक काल बतावे ।
पातंजलि योग वेदान्त नित ब्रह्म सुनावे ॥
सांख्य शासतर मांयने पुरुष प्रकृति अर्थाय ।
गोपीनाथ लख स्वानुभव सर्व वाद बिसराय ॥

टिप्पणी – षट शास्त्रों के कर्ता:—

[१] न्याय शास्त्र के कर्ता गौतम ऋषि
[२] मींमांसा ,, ,, जैमिन ,,
[३] वैशेषिक ,, ,, कणाद ,,
[४] साँख्य ,, ,, कपिल मुनि
[५] पातंजलि ,, ,, पातंजल ,,
[६] उत्तर मीमांशा शास्त्र के कर्ता वेदव्यासजी

कुण्डलिया (६४)

प्रज्ञानमानन्द ब्रह्महै ऋग् वेदहि बतलाय ।
अहं ब्रह्मास्मि वाक्य यह यजुर्वेद अर्थाय ॥

यजुर्वेद अर्थाथ तत्वमसि साम बखाने।
अयं आत्मा ब्रह्म अथर्वण वेद है माने॥
एक मान सिद्धान्त चहुं गोपीनाथ थिर थाय।
प्रज्ञानमानन्द ब्रह्म है ऋग वेदहि बतलाय।

टिप्पणी – वेद शब्द विद् धातु से बना है जिस के अर्थ– ज्ञानार्थ, सत्तार्थ, लाभार्थ एवं विचार है। संक्षिप्त में वेद का अर्थ है जानना।

कुण्डलिया (६५)

ब्रह्मा विष्णू *इन्द्र शिव जग सब मुझ में मान।
मुझसे भिन्न न कुछ यही आतम अनुभव ज्ञान॥
आतम अनुभव ज्ञान न पहुंचे वेद पुराणा।
प्रकृति संस्कृत वचन वचन का नहीं ठिकाना॥
गोपीनाथ स्वरूप मम व्यापक नभ ज्यों जान।
ब्रह्मा विष्णू इन्द्र शिव जग सब मुझ में मान॥

* टिप्पणी – स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णु स्वयमिन्द्र स्वयं शिवः।
स्वयं विश्वमिदम् सर्वं स्वस्मादन्यन्नकिंचन॥
(विवेक चूडामणि ३६८)

कुण्डलिया (६६)

श्रवण नैन जाने नहीं जीभ न सके बखान।
घ्राण न जाने कर सके त्वचा न जिसका ज्ञान॥
त्वचा न जिसका ज्ञान चित्त बुद्धी ना जाने।

अहं न पहुँचे तहां शब्द भी हार ही माने ।।
'गोपी' अनुभव आतमा ज्ञान स्वरूप निर्वान ।
श्रवण नैन जाने नहीं जीभ न सके बखान ।।

कुण्डलिया (६७)

गम्य * ज्ञान कर ब्रह्मपद सत चेतन सुख रूप ।
शान्त अशान्तहि ब्रह्म इक अनुभव परम अनूप ।।
अनुभव परम अनूप आतमा सबका जानी ।
ता से जुदा न सो अनुभव आतम निर्वानी ।।
'गोपी' अनुभव आतमा नाम रूप का भूप ।
गम्य ज्ञान कर ब्रह्मपद सत चेतन सुख रूप ।।

कुण्डलिया (६८)

नभ सम विभु चेतन जिमि अग्नि उष्णता चीन ।
तिमि आतम बिन कुछ नहीं आत्मानुभव प्रवीन ।।
आत्मानुभव प्रवीण नित्य है स्वयं प्रकाशी ।
चेतन शुद्ध स्वरूप आतमा है अविनाशी ।।
गोपीनाथ आतम निर्वानी स्वयं स्वयं मे लीन ।
नभ सम विभु चेतन जिमि अग्नि उष्णता चीन ।।

* टिप्पणी – तद्विद्या विषयं ब्रह्म सत्यम् ज्ञानसुखा द्वयम् ।
शान्तं च तद तीतं च परं ब्रह्म तदुच्यते ।।
(पं. द.)

(आत्मानुभव का अंग समाप्त)

अथ

वेदान्त सिद्धान्त का अङ्ग

* प्रारम्भ *

कुण्डलिया (६६)

सत्यम् ज्ञानमनन्त ब्रह्म यों भाखत है वेद।
मति विहीन नर मूढ़ जन न्यारा देखे भेद॥
न्यारा देखे भेद ब्रह्म बिन विश्व है नाहीं।
बीज वृक्ष में जैसे वृक्ष बीज के मांही॥
गोपीनाथ तज भिन्नता ओलख एक अभेद।
सत्यम् ज्ञानमनन्त ब्रह्म यों भाखत है वेद॥

कुण्डलिया(१००)

पट नामहि जिसका धरा परमारथ से सूत।
ताना बाना तान के वस्त्र बना मजबूत॥
वस्त्र बना मजबूत लगे वो सबहि सुहाना।
ताना बाना एक सूत सबमांहि समाना॥
गोपीनाथ ब्रह्म सर्व में ब्रह्म बिना नहिं भूत।
पट नाम जिसका धरा परमारथ से सूत॥

कुण्डलिया (१०१)

सागर घट घट बीच में न्यारा दर्शे भेद।
जल दोनों में एक है रंचक नहीं विभेद॥

रंचक नहीं विभेद वेद का यह फरमाना।
ईश-जीव तज भेद एक चेतन अधिष्ठाना॥
गोपीनाथ तू आपहै सदा अखण्ड अभेद।
सागर घट घट बीच में न्यारा दर्शे भेद॥

कुण्डलिया (१०२)

सोना जैसे एक है जेवर विविध प्रकार।
टूट फूट जेवर मिटे स्वर्ण सदा इकसार॥
स्वर्ण सदा इकसार कमी काहे की नांही।
त्योंही व्यापक ब्रह्म पूर्ण नित अचल अथाही॥
गोपीनाथ सिद्धान्त यह जाने जानन हार।
सोना जैसे एक है जेवर विविध प्रकार॥

कुण्डलिया (१०३)

ब्रह्म सत्य मिथ्या जगत यह वेदों का सार।
ब्रह्मात्मा के ज्ञान बिन कैसे हो भव पार॥
कैसे हो भव पार एकता जो नहिं जाने।
होव न दुख का अन्त भेद दोनों का माने॥
आत्म ब्रह्म की एकता यह असली सिद्धान्त।
गोपीनाथ अद्वैत लख यों कहता वेदान्त॥

कुण्डलिया (१०४)

आद मध्य अरु अन्त नहिं व्यापक नभ ज्यों मान।
सो मैं सच्चिदानन्दहूं चेतन ब्रह्म पिछान॥

चेतन ब्रह्म पिछान अनावृत निर विकारा।
अस्ति भाति प्रिय रूप सर्व में है इकसारा॥
हेतु कार्य दोनों रहित गोपीनाथ महान।
आदि मध्य अरु अन्तनहिं व्यापकनभ ज्यों मान॥

कुण्डलिया (१०५)

बन्ध मोक्ष*मुझ में नहीं गुरु सिख नहि मम रूप।
माया रूप विकार मैं ज्ञान स्वरूप अनूप॥
ज्ञान स्वरूप अनूप मेरा नहिं आरम्परा।
साक्षि सच्चिदानन्द असंग मै निर्विकारा।
गोपीनाथ मन बाणि बिन नामरूप का भूप।
बन्ध मोक्ष मुझ में नहीं गुरु सिख नहिं मम रूप॥

टिप्पणी* — न मे बन्धो न मे मुक्तिर्नमे शास्त्रं न मे गुरुः।
मायामात्र विकासत्वान्मायातीतोऽहम् द्वयम्॥

कुण्डलिया (१०६)

भेदा भेद* कुछ है नहीं द्वैताद्वैत नहिं कोय।
जगत गुरु सिख है नहीं ब्रह्म ज्यों का त्यों सोय॥
ब्रह्म ज्यों का त्यों सोय एक अरूप अनामी।
सो अवाच्य अनूप करूँ मैं किसे नमामी॥
केवल गोपीनाथ मैं सृजन मिटन नहिं होय।
भेदा भेद* कुछ है नहीं द्वैता द्वैत न कोय॥

टिप्पणी* —सर्वथा भेद कलनं द्वैता द्वैत न विद्यते।
नास्ति नास्ति जगत सर्वं गुरु शिष्यादिक नहीं॥

कुण्डलिया (१०७)

ज्ञान तर्क समाधि नहिं योगकाल अरु देश ।
मैं स्वाभाविक नित्य हूं नहीं गुरु उपदेश ॥
नहीं गुरु उपदेश परम तत्व स्वरूपा ।
महाकाश सम व्यापक इक अद्वैत अनूपा ॥
सामान्य विशेष मुझमें नहीं'गोपी' निर विशेष ।
ज्ञान तर्क समाधि नहि योग काल अरु देश ॥

कुण्डलिया (१०८)

दर्शन दृश्य रु ज्ञान ज्ञय यह भ्रम तजि विश्राम ।
आतम चेतन रूप मम अव किंचित नहिं काम ॥
अवकिंचित नहिं काम त्रिकाल रहूँ इकसारा ।
अस्तुति निंदा नांय ब्रह्म मैं निर्विकारा ॥
गोपीनाथ अवाच्य में पूरण आतम राम
दर्शन दृश्यरु ज्ञान ज्ञय यह भ्रम तजि विश्राम ॥

कुण्डलिया (१०९)

जाग्रत स्वप्न सुषुपती नहि तुरिया का लेश ।
मन बाणी बिन रूप है नहिं सामान्य विशेष ॥
नहिं सामान्य विशेष दृश्य दृष्टा भी नांही ।
केवल शुद्ध अनूप त्रिपुटि नहिं मेरे मांही ॥
गोपीनाथ सोहं स्वयम अपने आप रमेश ।
जाग्रत स्वप्न सुषुपती नहिं तुरिया का लेश ॥

* अथ *

दोहा पंच रत्न

प्रारम्भ

दोहा नं० १

विषय प्रसंगारंभ कर, करे उसी में लीन।
उपक्रम उप संहार सो, इन दोनों को चीन॥

दोहा नं० २

पुनि पुनि कथन अद्वैत का, सो अभ्यास पहिचान।
श्रुति भिन्न प्रमाण को अविषय अपूर्वता जान॥

दोहा नं० ३

अद्वैत तत्व के ज्ञान का फल निर्वाण कहाय।
अभेद की महिमा करे अर्थवाद सो भाय॥

दोहा नं० ४

अद्वैतहि दृष्टान्त दे सो उपपति लो मान।
गोपीनाथ षट लिंग लख पूरण हो उर ज्ञान॥

दोहा नं० ५

आत्म अनात्म विवेक अरु षट सम्पति वैराग।
जो मुमुक्षता युक्त है अधिकारी बड़भाग॥

* दोहा पंचरत्न समाप्त *

तृतीय प्रकरण

प्रश्नोत्तर प्रकाश – प्रारम्भ

प्रश्न	उत्तर
तीन दोष कौन से हैं	मल, विक्षेप और आवरण ।
इनकी निवृति किससे होवे	कर्म, उपासना और ज्ञान से ।
तीन ताप कौन २ से हैं	अध्यात्म, अधिभूत, और अधिदेव।
तीन कर्म सो क्या हैं	संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण।
तीन काल सो क्या हैं	भूत, भविष्यत और वर्तमान ।
तीन इच्छा कौनसी हैं	अनिच्छा, इच्छा और परेच्छा ।
तीन मूर्ती कौनसी हैं	ब्रह्मा, विष्णु और शिव ।
चार अवस्था सो क्या हैं	जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरिया ।
इनके स्थान कौन से हैं	नेत्र, कंठ, हृदय और मूर्धनी ।
चार वाणी कौनसी हैं	बैखरी, मध्यमा, पश्यंति, परा ।
इनके भोग कौन से हैं	स्थूल, सूक्ष्म, आनन्द, आनंदाभास ।
चार शक्ति कौनसी हैं	क्रिया, ज्ञान, द्रव्य और इच्छा ।
इनके गुण कौनसे हैं	रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण, और शुद्धसत्वगुण ।
इनकी मात्रा कौनसी हैं	अकार, उकार, मकार, अर्धमात्रा।
इनके अभिमानी कौन हैं	विश्व, तेजस, प्राज्ञः साक्षी ।
इनकी मुक्ति कौन सी है	सालोक्य, सामीप्य, सारुप्य और सायुज्य ।

प्रश्न	उत्तर
चार भाव कौन से हैं ?	अन्योन्याभाव, प्रध्वंसाभाव, प्रागभाव, अत्यन्ताभाव ।
चार वेद कौन से हैं ?	ऋग, यजु, साम, अथर्व ।
चार मंत्र कौन से हैं ?	प्रज्ञानमानन्द ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि, तत्वमसि ब्रह्म, अयं आत्मा ब्रह्म ।
आकाश के चार भेद हैं ?	घटाकाश, जलाकाश, मेघाकाश और महाकाश ।
चार भेद चेतन के कौनसे हैं?	जीव, ईश, कूटस्थ, और ब्रह्म ।
चार खान कौनसी हैं ?	जरायुज, अंडज, उद्भिज,स्वेदज।
चार बिघ्न सो क्या हैं ?	रसा (स्वाद)कषाय, बिक्षेप, लय
चार पुरुषार्थ सो क्या है ?	धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।
पंच कोश सो क्या हैं ?	अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय ।
पञ्च क्लेश कौन हैं ?	अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ।
पांच मुद्रा कौनसी हैं ?	खेचरी, भूचरी, चाचरी, अगोचरी और उनमनी ।
अनुभव पांच प्रकार के कौन से हैं ?	मति, श्रुति मन पर जय, बोध और केवल ।
पंच ज्ञान कौन से हैं ?	दृढ़, अपरोक्ष, आत्मा, अनुभव, पदप्राप्ति ।

प्र०--पांच प्रकार की भेद भ्रान्ति कौनसी हैं:—उ०-जीव, ईश्वर का भेद, जीवनो का परस्पर भेद, जड़न का परस्पर भेद, जीव जड़ का भेद और जड़ ईश्वर का भेद ।

प्र०--हे स्वामी, पांच तत्वों के नाम, चाल, गुण, रङ्ग, स्थान, देवता, शक्ति, बीज, वाहन इन सब को भिन्न २ कर समझाओ ?

उ०--हे शिष्य मैं नीचे कोष्टक देता हूँ जिससे स्पष्ट समझ लेना ।

पांच तत्वों का कोष्टक --

नाम	चाल	गुण	रंग	स्थान	देवत	शक्ती	बीज	बाहन
आकाश	२	शब्द	श्याम	मस्तक	पंचवक्र	शाकनी	ह	हस्ती
वायु	८	१ शब्द २ स्पर्श	हरा	नाभि	ईशान	काकनीं	यं	मृग
अग्नि	४	१ शबद२ स्पर्श ३ रूप	लाल	पित्ता	रुद्र	लाकनी	रं	मडा
जल	१६	१ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस	श्वेत	लिलाट	विष्णु	राकनी	लं	मकर
पृथ्वी	१२	१ शब्द २ स्पर्श ३ रूप ४ रस ५ गंध	पीला	कलेजा	ब्रह्मा	डाकनी	वं	कुंजर

प्र० षट लिंग कौन से हैं:—

उ० उपकर्म, उपसंहार, अभ्यास, अपूर्वता, फल और उपपति ।

प्र०-षट शास्त्र कौन से हैं:— पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग यह षट शास्त्र बताए हैं ।

प्र०-षट प्रमाण तो क्या हैं:— प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, यह षट प्रमाण बतलाए हैं।

प्र०-वेदों के छः अङ्ग कौन से हैं उ०-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष यह छै अंग है ।

प्र०-षट सम्पत्ति कौनसी है:—शम, दम, श्रद्धा, समाधान, उपराम, तितिक्षा ।

प्र०-सात भूमि कौनसी हैं, उ० शुभ इच्छा, शुभ विचारणा, तनुमानसा, सत्वापत्ति, असंगशक्ति, पदार्थभावनी, तुरिया ।

प्र०-७ चेतन कौन से हैं:— उत्तर — ईश्वर, जीव, शुद्ध, परमाता, प्रमाण, प्रमेय, प्रमा यह ७ चेतन हैं ।

॥ दोहा ॥

जूप, मांस, मधु, वेसवा, हिंसा, चोरी, नार ।
सप्त लोक में सप्त है सप्त न छूने उद्धार ॥

प्र०-सात द्वीप और ७ समुद्र कौन से हैं और उनके स्थान कौन से हैं ।

उ०-नीचे कोष्टक को देखो जिससे ज्ञात होगा ।

सात द्वीप समुद्र और उनके स्थान —

सात द्वीप	स्थान	सात समुद्र	स्थान
जम्बू द्वीप	मेदा	सुरा	दसवां वार
साक द्वीप	अस्थि	घृत	श्रवरण
कुश द्वीप	सिरा	ईख	नेत्र द्वार
क्रौंच द्वीप	रक्त	दधि	नासिक द्वार
सालम द्वीप	मांस	शहद	मुख द्वार
श्वेत द्वीप	त्वचा	खीर	हृदय द्वार
पुष्कर द्वीप	रोम	खार	नाभि द्वार

प्र०-अन्तरंग साधन कौन से हैं ? उ० - विवेक, वैराग, षट सम्पत्ति, मुमुक्षुता, श्रवरण, मनन, निदिध्यासन, तत्वं ।

प्र० - अष्टांग योग सो क्या हैं ? उ० - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, सामाधि, यह अष्टांग याग हैं ।

प्र० - आठ मद क्या हैं ? उ० - १ कुलमद, २ शीलमद, ३ धनमद, ४ रूपमद, ५ जोबनमद, ६ विद्यामद ७ तपमद ८ राज्यमद यह अष्ट प्रकार के मद हैं

प्र०- नौ खण्ड और दस नाड़ियां कौन सी हैं ? उ० - नीचे कोष्टक देखो ।

नौ खण्डों के नाम	स्थान	नाडियां के नाम	स्थान
वरुण	रसना	शंखनी	गुदा
इन्द्र	कर	किरकला	लिंग
सोम	त्वचा	पूषा	बायां कान
ब्रह्म	श्रवण	अस्मिनी	दाहिना कान
भगस्थ	चक्षु	गंधारी	बायां नेत्र
नाग	घ्राण	हस्तनी	दाहिना नेत्र
भरत	मस्तक	लम्बुका	जिह्वा
ताम्र	मूल द्वार	इड़ा	बांया स्वर चन्द्र
कसेरु	चरण	पिंगला	दाहिना स्वर सूर्य

सुष्मणा इनके बीच में है जिसको अत्यन्ता नाम की नाड़ी कहते हैं।

प्र०-दस लिंग धर्म कौनसे हैं:—

उ०-दोहा:--क्षमा, अहिंसा, दया, मृदु, सत्य बचन, तप, दान
शील, शौच, तृष्णा बिना, धर्म लिंग दस जान

प्र०-१० दोष क्या हैं।

उ०-दोहा:--चोरी, जारी, हिंसा, तन के दोष हैं तीन,
निंदा, झूठ, कठोरता वाकचपल बकचीन।
तृष्णा, चिन्ता, परतिय गांमी मन के दोष।
कायिक,वाचिक, मानसिक, दसोंदोष तज मोक्ष।

१० प्राणों का नक्शा

नाम	स्थान	क्रिया
प्राण	हृदय	क्षुधातृषा
अपान	गुदा	मल मूत्र का त्याग
समान	नाभि	अन्नजल पचाना
उदान	कण्ठ	पूरक कुम्भक रेचक कर्म
कुर्म	नेत्र	पलक खोलना, बन्द करना
किरकल	दिल	छींकना
नाग	कण्ठ	डकार
देवदत्त	छाती	जम्भाई (उबासी)
धनंजय	सर्वत्र	देह फुलाना
व्यान	संधियों में	उठाना चलाना

प्र०-हे स्वामी षट चक्र कौन से हैं ? उ०-हे शिष्य नीचे कोष्टक देता हूँ जिससे स्पष्ट समझ में आजावेगा ।

षट चक्रों का नक्शा

नाम चक्र	देवता	शक्ति	रंग	जप	पंख	अक्षर
मूलाधर	गणेश	शुद्ध बुद्ध	लाल	६००	४	वशषस
स्वाधिष्ठान	ब्रह्मा	सावित्री	पीला	६०००	६	बभमयरल
मणि पूरक	विष्णु	लक्ष्मी	नीला	६०००	१०	डढणतथदधन पफ
अनाहत	शिव	पार्वती प्राणशक्ति	श्वेत	६०००	१२	कखगघङचछज झञटठ
विशुद्ध	जीव		गौर	१०००	१६	अआइईउऊऋ ॠऌॡएऐओऔ अंअः
आज्ञा	ज्योति	इच्छा	अग्नि	१०००	२	हक्ष
सहस्र दल	सद्गुरु	मोक्ष	सर्व	१०००	१०००	मनबुद्धि अर्थात त्र ज्ञ

प्र०-शब्द की उत्पत्ति कहां से होती है।

उ०-शुन से शब्द की उत्पत्ति होती है।

प्र०-शब्द कितने प्रकार का है।

उ०-ध्वनि, वर्ण, भेद से दो प्रकार का है।

प्र०-शब्द की सामग्री क्या है।

उ०-स्वर, व्यन्जन।

प्र०-शब्द की वृत्ति कौनसी है।

उ०-शक्ति,लक्षणा, यह दो वृत्ति है।

प्र०-नाद कहां से प्रकट होता है।

उ०-हृदयाकाश में दहराकाश है वहां से नाद प्रकट होता है।

प्र०-स्थूल देह किसे कहते हैं।

उ०-नीचे कोष्टक देखो।

पंचभूत	आकाश	वायु	तेज	जल	पृथ्वी
आकाश	शोक	प्रसार्ण	निद्रा	लार	रोम
वायु	काम	ध्यावन	तृषा	पसीना	त्वचा
तेज	क्रोध	बलन	क्षुधा	मुत्र	नाड़ी
जल	मोंह	चलन	क्रांती	वीर्य	मांस
पृथ्वी	भय	आकुचन	आलस्य	रक्त	हाड

प्र०-सूक्ष्म शरीर किसे कहते हैं।

उ०-पांच ज्ञान इन्द्री, पांच कर्म इन्द्रीं, पांच प्राण मन बुद्धि यह मिलकर १७ तत्व हुए इनको सूक्ष्म शरीर कहते हैं।

प्र०-कारण शरीर किसे कहते हैं ?

उ०-अज्ञान को कारण शरीर कहते हैं ।

प्र०-षट विकार किसे कहते हैं ।

उ०-षट नाम छः वस्तु का उनमें १ जन्म २ प्रगट ३ बढ़ना ४ प्रयाण ५ कमजोर ६ नाश यह षट विकार हैं ।

प्र०-षट आकार सो क्या हैं ।

उ०-१ लम्बा २ छोटा ३ जाडा ४ पतला ५ टेढ़ा ६ सीधा यह षट आकार है ।

प्र०-षट उर्मी कौनसी है ।

उ०-१ जन्म २ क्षुधा ३ पिपासा ४ हरष ५ शोक ६ मरण ।

प्र०-चौदह विद्या सो क्या हैं ।

उ०-१ राग २ रसायन ३ नृत्य ४ नटकला ५ वैद्यक ६ अश्व चढ़न ७ व्याकरण ८ ज्योतिष ९ चोरी १० धनुषविद्या ११ रथ १२ जलतिरण १३ ब्रह्म ज्ञान १४ मंत्र ।

प्र०- चौदह रतन कौन से हैं ।

उ०- १ अमृत २ विष ३ एरावत ४ अश्व ५ कल्पवृक्ष ६ कामधेनु ६ लक्ष्मी ७ रम्भा ९ मद्य १० चन्द्रमा ११ शङ्ख १२ धनुष १३ कौस्तुभमणी १४ धन्वतरी यह चौदह रतन हैं ।

प्र०- चौदह लोक कौन से हैं ।

उ०- आगे कोष्टक में देखो ।

॥ सात लोक नीचे का ॥

लोक के नाम	स्थान	देवता
१ तल	पीठ	कूर्म
२ अतल	हाथ	शेष
३ वितल	छाती	धवल
४ सुतल	पेट	सावित्री
५ रसातल	पेडू	लक्ष्मी
६ तलातल	चरण	कश्यप
७ पाताल	गुदा	गणेश

॥ ७ लोक उपर के ॥

लोकों के नाम	स्थान	देवता
१ भू लोक	उपस्थ	ब्रह्मा
२ भुवः लोक	त्रिकुटी	परमहंस देवादिक
स्व लोक	नाभि	विष्णु
४ मह लोक	हृदय	महादेव
५ जन लोक	कण्ठ	जाव
६ तप लोक	ललाट	बिन्दु सूर्यादिक
७ सत्य लोक	सर्वत्र	ब्रह्म स्वरूप

प्र०-चौदह त्रिपुटी सो क्या है ।

उ०-नीचे कोष्ठक में ध्यान पूर्वक देखो ।

अध्यात्म अधिभूत अधिदेव अर्थात्

१४ त्रिपुटियों का नकशा

नाम इन्द्री	नाम विषय	देवता
श्रवण	शब्द	दिग्पाल
नेत्र	रूप	सूर्य
जिह्वा	रस	वरुण
नाक	गंध	अश्विनीकुमार
त्वचा	स्पर्श	वायु
मन	संकल्प	चन्द्रमा
बुद्धि	निश्चय	ब्रह्मा
चित	चिन्तन	महादेव
अहंकार	अहंपन	रुद्र
हस्त	आदान प्रदान	इन्द्र
पाद	चलना	वामन
मुख	बोलना	अग्नि
गुदा	मलत्याग	यमराज
लिङ्ग	मैथुनवमूत्रत्याग	प्रजापति

❀ ॐ तत्सत् ❀

चतुर्थ प्रकरण

स्फुट-भजन-संग्रह

श्री रुड़मल आर्य ग्राम पटवारियों का बास

ता० श्री माधोपुर, जि० सीकर के भजन

❀ दोहा ❀

नमो नमो गुरु देव को, निसदिन बारम्बार ।
रूड़मल पर कर कृपा, कीन्हा भव जल पार ।।

भजन १ (रंगत–पारवा)

मैं सुमरूँ गुरु महाराज को किया मेरा निस्तारा ।।टेर।।
सतगुरु देव मोक्ष के दाता, जन्म मरण का तोड़े नाता,
शीश उन्हें मैं प्रथम झुकाता, फेर बजाऊँ साजको—
गुण गाऊँ बारम्बारा ।।किया०।।
सतगुरु स्वामी दीन दयाला, दे घट ज्ञान किया उजियाला,
कर्म भर्म विनशे तत्काला, तजकर के अन्दाज को—
प्रत्यक्ष स्वरूप निहारा ।।किया०।।
सत चित अरु आनन्द स्वरूपा, नाम रूप माया पति भूपा,
मन वाणी बिन ब्रह्म अनूपा, लखा स्वयं निर्देश को—
काल-वस्तु से न्यारा ।।किया०।।

गोपीनाथ गुरु समरथ पाया अहं ब्रह्म प्रत्यक्ष लखाया, रूड़मल रामसमझ थिर थाया, गुरुदेव सुधारचा काज को—करि भवसागर से पारा ।।४।।

भजन नं० २ (राग—टोडी)

मेरे उर गुरू मूर्ति को ध्यान ।
गुरु देवन में देव श्रेष्ठ है कह सदग्रंथ बखान ।।टेर।।
गुरु भक्ती सबसे बड़ी गुरु गीता का सार ।
गुरु भक्ती बिन ना मिले निज जीवन का सार ।।
गुरु बिन मिटे न खैंचा तान ।।१।।
सारे साधन छोड़ के गुरु भक्ती उर धार ।
मुक्ती में संशय नहीं हो भव सागर पार ।।
मूल इक क्रिया मात्र का ज्ञान ।।२।।
गुरु चरणामृत पीवतां पाप ताप हो नाश ।
गुरु भक्ती जप ध्यान कर धारि हिये विश्वास ।।
तीर्थ सब गुरु चरणाँ दर्म्यान ।।३।।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु है गुरु शंकर का रूप ।
गुरु पूरण परमातमा नाम रूप का भूप ।।
गुरू गुण कंहलग करूँ बखान ।।४।।
गोपीनाथ गुरुदेव शम सिर माथे का मोड़ ।
रूड़मल गुरु भक्ति से मिटे सकल भव भोड़ ।।
रहूँ नित गुरु पद में गलतान ।।५।।

भजन नं ३ (राग-पारवा)

सतगुरु बिन भवधार से है कौन बचावन हारा ॥टेर॥
मात पिता तिरिया सुत भ्राता, स्वारथ हेतु करे सब नाता,
अन्त समय कोई काम न आता, क्यों प्रीति करो परिवार से--
इन में है कौन तुम्हारा ॥१॥
अन्न वस्त्र धन मुख्य है भाई, रजत स्वर्ण मणि गौण कहाई,
गौ गज बाजि नष्ट हो जाई क्यों गरब रहा इस भार से--
सन्तोष बिना बेकारा ॥२॥
इस जग में सुख दिखता नाही, क्यों पच २ कर मरता भाई,
कर यज्ञादि जो स्वर्ग सिधाही छुटे नहीं दुख भार से --
करले उर में इतबारा ॥३॥
गोपीनाथ जी सतगुरु ज्ञानी, दूरकरी मेरी भ्रम ग्लानी,
मिटी हड़मल खैंचातानी, सतगुरु के उपकार से --
हो गया मेरा उद्धारा ॥४॥

भजन ४ (रंगत-पारवा)

मैं जाना आत्म स्वरूप को मेरी संशय सकल बिलाई ॥टेर॥
अजा संग केहरिपन भूल्या, खाये पत्ते फिरा अद्भूल्या,
ब्रह्मनीष्ट गुरु जबै कबूल्या, त्यागा उस भ्रम रूप को --
हो गया सर्व सुख दाई ॥१॥
जीव पना मुझमें नहिं पाया, शुद्ध बुद्ध मैं रूप अजाया,
निज स्वरूप लख के थिरथाया, सब नाम रूप के भूप को --
ज्यों का त्यों अखण्ड गोसांई ॥२॥

सच्चिदानन्द अमर अविनाशी, ज्ञान स्वरूप स्वयं प्रकाशी,
सदा एक रस है सुखराशी, क्या वर्णन करूँ अनूपको—
है कहन सुनन में नांई ॥३॥
गोपीनाथ गुरु समरथ पाया, भेदाभेद सबही बिसराया,
खाता रूड़मल खतम कराया, लखके एक अरूपको—
दिया जन्म मरण छिटकाई ॥४॥

भजन नं ५ (राग–पारवा)

करदेखी खूब तलाशी, बिन ज्ञान मुक्ति है नांय ।टेर॥
देवल देव धोक सबलीना, व्रत करके तन सुखाय दीना,
झालर शंख बजा नित लीना, फिरभी चिन्ता नहिं जाय—
नहिं मनकी मिटी उदासी ॥१॥
योग धारना करली क्रिया, नैनमूंदकर ध्यानज धरिया,
रोका द्वार श्वास उर भरिया, लखि ज्योति त्रिकुटी मांय—
है तत्व-प्रकाश विनाशी ॥२॥
अजपाजाप जपा बहु काला, सोहं सोहं शब्द निकाला,
लोभी उर नहिं हुआ उजाला, रहा भर्म घट छाय—
नहिलखा ब्रह्म अविनाशी ॥३॥
गोपीनाथ गुरू समरथ पाया, भेदाभेद सभी बिसराया,
रूड़मल खाता खतम कराया, लखके एक अरूप को—
कटगया क्लेश चौरासी ॥४॥

भजन नं० ६ (राग-गोड़ी)

सतगुरू बिन भव से कौन उबारन हार ॥टेर॥
तन मन धन अर्पण कर गुरु को सुमरो बारम्बार।
कृपा करे जब सतगुरु स्वामी करदे भवजल पार ॥१॥
सतगुरु बिन गम पावे नांही लखे न सार असार।
जगत असार सार आतम का करवादे दीदार ॥२॥
अज अविनाशी है सुखराशी आतम अमल अविकार।
सदा एक रस घाट बाद नहिं सत्य नित्य इकसार ॥३॥
गोपीनाथजी सतगुरु मिलिया उपजा हिये विचार।
गुरू कृपा से कहे रूड़मल निज में लिया निहार ॥४॥

भजन नं० ७ (राग-रसिया)

समझ मन गुरु चरणाँ में चाल --
झगड़ो कटसी रे ॥टेर॥
मानख जन्म अमोलख हीरो पायो है निठसी।
यो अवसर तू जाय चूक फिर काल आय गिटसी ॥१॥
अधम उधारण जन्मसुधारण कर सेवा झटसी।
तत्वमसी उपदेश सुनावे जब सौदो पटसी ॥१॥
जीव भाव अविद्या भागे द्वैत सर्व हटसी।
जन्म मरण को झगड़ो भारी यम कागज फटसी ॥३॥
जैसे तरंग मिले सागर में तरंग भाव मिटसी।
प्रम पद मांही कहे रूड़म.. निर्भय हो डटसी ॥४॥

भजन नं० ८ (राग—रसिया)

सेवा करलेरे सतगुरुको नरतन मिले न बारम्बार ॥टेर॥
सतगुरु स्वामी अन्तर्यामी अधम उधारन हार।
जीव दुखी तारण कारण हित लियो मनुज अवतार ॥१॥
तनसे सेवा करो गुरू की मन से नाम उचार।
धन से कर सम्मान गुरू का उर उपदेशहि धार ॥२॥
सदगुरु सद उपदेश सुनावे उपजै हिये विचार।
अपनो रूप आपने दर्शे भागै भर्म अंधार ॥३॥
बिन गुरु ज्ञान मोक्ष नहिं होवे कह सदग्रंथ पुकार।
कहे रूड़मल गोपीनाथ का भूलूँ नहीं उपकार ।४॥

भजन नं ९ (राग—मस्ताना)

पाया जी हमने घट में रमैया राम ॥टेर॥
रोम रोम रगरग में व्यापक है पूरण घनश्याम।
नहीं जवान वृद्ध अरु बालक नहीं श्वेत अरु श्याम।
आद अन्त मध्य से न्यारा है नित ही सुख धाम ॥१॥
बने मिटे आवे नहिं जावे ज्यों का त्यों थिर ठाम।
घट घट बासी है अविनाशी अनाभय बे नाम ॥२॥
ज्ञान स्वरूप अनन्त अमर, नहिं हद बेहद का काम।
सुरत नुरत पहुँचेन वहांपर साधन थके तमाम ॥३॥
गोपीनाथ गुरु समरथ पाया पुनि २ करूँ प्रणाम।
आर्य रूड़मल गुरु कृपा से पालीना विश्राम ॥४॥

❀ रूड़मल आर्य के भजन समाप्त ❀

श्री भगवान सहाय आर्य कृत

भजन प्रारम्भ

कुण्डलिया

नमो नमो परब्रह्म को ज्ञान स्वरूप अनन्त ।
नमो नमो गुरु देवजी नमो नमो सब सन्त ॥
नमो नमो सब सन्त किया उर ज्ञान उजाला ।
भय तम भागा दूर खुला हिवड़े का ताला ॥
सद गुरु गोपीनाथ को नमस्कार भगवन्त ।
नमो नमो पर ब्रह्म को ज्ञान स्वरूप अनन्त ॥

भजन नं० १ (राग–मारवाड़ी)

सद गुरु स्वामी को बन्दन बारम्बार ।
तन से मन से और वचन से करूँ प्रणाम अपार ॥टेर॥
निर्गुण अनामी सबका स्वामी चेतन निर आकार ।
भक्तजनों के तारण कारण लिया सन्त अवतार ॥१॥
तत्वमसी महावाक्य वेद का समझाया तत्सार ।
ज्ञान भानु उर उदय हुआ भागा है तिमिर अपार ॥२॥
दरशा ब्रह्म सकल घट पूरण जड़ चेतन इकसार ।
सो मम रूप अचल अविनाशी निर विकल्प निरधार ॥३॥
मति न लखे जेहि मती लखे जो स्वयं ज्ञान आगार ।

सत्यम् ज्ञानमनन्त ब्रह्म महिमा अमित अपारा ॥४॥
गोपीनाथजी सदगुरु स्वामी किया परम उपकारा।
कह भगवान सहाय स्वयं को निज में लिया निहारा ॥५॥

भजन नं० २ (राग–कव्वाली)

अपना निज रूप निहारा है।
गुरुमुख से तत्व विचारा है ॥टेर॥
त्रय काल अबाधित सो नित है,
धर्म देश बस्तु सब अनित्य है।
सामान्य चेतन सोही सत है,
सोही निज रूप हमारा है ॥१॥
सच्चिदानन्द ब्रह्म सुखराशी,
व्यापक पूरण अज अविनाशी।
है ज्ञान स्वरूप स्वयं प्रकाशी,
यह रूप लक्षण उर धारा है ॥२॥
मै सुद्ध बुद्ध विभु स्वामी हूँ,
मैं शिव प्रेरक अन्तर्यामी हूँ।
मैं सर्व नामों में नामी हूँ,
अदृष्ट अरूप अपारा है ॥३॥
गोपीनाथ गुरु पाया है,
कर किरपा ज्ञान बताया है।
भगवान सहाय थिर थाया है,

गुरु वेद का यह उपकारा है ।।४।।

भजन नं० ३ (राग-मारवाड़ी)

मैं हूँ नित पूरण ब्रह्महि सर्वाधार
यों ही वेद वेदान्त बखाने मैंहि बार मैंहि पार ।।टेर।।
प्रज्ञानन्द ब्रह्म ऋग वेदहि का वाक्य है ज्ञानाकार ।
तत्वमसी कहे सामवेद तुम कर देखो निरधार ।।१।।
अहं ब्रह्म यजुर्वेद बखाने जो है सबका सार ।
अयं आत्म ब्रह्म अचल करे वेद अथर्व पुकार ।।२।
परिच्छेदत्रय रहित अखण्ड नित है विभु अनन्त अपार ।
सत्य ज्ञानमनन्त ब्रह्म में मेरा सब विस्तार ।।३।।
है अनावृत अद्वैत अगोचर मुझमें न द्वैत विकार ।
भगवान सहाय अवाच्य पदमें थके वृत्य व्यवहार ।।४।।

भजन नं० ४ (राग-आसावरी)

सन्तो, आत्म अखत अविनाशी
अपने आप और नहिं दूजा नहिं आवे नहिजासी ।।टेर।।
है नित अचल अमर विभु पूरण सत्य ब्रह्म प्रकाशी ।
आद अन्त मध्य से न्यारा दृष्टा इक निर्वासी ।।१।।
अडिग डिगे न कभी क्षर अक्षर पारन जिसका पासी ।
मन वाणी इन्द्रिय नहिं पहुँचे निः अक्षर थिर थासी ।।२।।
विधी निषिद्ध हद बेहद नांही चेतन शुद्ध सुखरासी ।
है सब ठौर और सब कुछ है मैं तू भाव बिलासी ।।३।।

कनक से कुण्डल कुण्डल कनक से ओत प्रोत कहलासी ।
भगवान सहाय अद्वैत में अनुपम द्वैत नजर नहीं आसी ॥४॥

भजन नं० ५ (राग–आसावरी)

साधो भाई सत्य सिद्धान्त उरधारा ।
ब्रह्म है मुझमें मैं हूँ ब्रह्म में ज्यों जल-तरंग न न्यारा ॥टेर॥
जैसे सोना एक कहीजे गहना विविध प्रकारा ।
टूट फूट भूषण में होवे स्वर्ण सदा इकसारा ॥१॥
धरे चाक पर मिट्टी बहुविध वर्तन घड़े कुम्हारा ।
बर्तन फूट बने पुनि मिट्टी उसमें नहीं बिगारा ॥२॥
तिलमें तैल काष्ट में अगनी दधि बिच घिरत निहारा ।
मेंहदी में लाली गंध पुष्पमें त्योंही ब्रह्म पसारा ॥३॥
एकोहं बहुश्याम प्रजायते श्रुति यों करे पुकारा ।
मैं ही एक रूप बहु धारूँ याते असंग अपारा ॥४॥
गोपीनाथजी निज स्वरूपका दीन्हा मुझे सहारा ।
लख भगवान सहास आपमें मैं तू भेद बिसारा ॥५॥

भजन नं० ६ (राग–मारवाड़ी)

स्वामी करुणाकर दृष्टी डाल शरणतेरी आन पड़ा ।टेर॥
देवत मूरत पूजन से मैं बहुबिधि कष्ट करा ।
तीरथ न्हा हैरान हुआ कुछ कारज नांहि सरा ॥१॥
जप तप व्रत कीना बहुतेरा तनको करदीना पिंजारा ।
फिरभी नहीं शान्ति पाई खोयदई बिरथा उमरा ॥२॥

संध्या सरोदा धरचा ध्यान उरसे मर्म नहीं निसारा ।
संशय सर्व रात दिन डसिया नहीं टला जमका खतरा ।।३।।
नित्य नेम निश्चय उरधारा संचित पातक नहीं टरा ।
शास्तर पद बहु वर्ष बिताया तोभी द्वैत न हुआ परा ।।४।।
गुरु समान और नहिं दाता श्रुति सन्तों ने साख भरा ।
कह भगवान सहाय हरो दुख काटो सब जग का झगरा ।।५।।

भजन नं० ७ (राग–मांड)

गुरु थे छो अधम उधारण हार,
कृपा कर कीज्यो भव से पार ।।टेर।।
चल रहा रहट चौरासी चक्कर पायो दुक्ख अपार ।
दया करो हे दयालु दाता जन्म मरण दुख टार ।।१।।
तुमहो स्वामी करुणा सागर करुणा दृष्टि डार ।
दे सद ज्ञान हरो अज्ञाना दिव्य दृष्टि दो सार ।।२।।
गुरु बिन ज्ञान मोक्ष नहिं होवे कह सदग्रंथ पुकार ।
तीन देव अरु रामकृष्ण ने गुरुवर लीना धार ।।३।।
गोपीनाथजी सद गुरु स्वामी करो मेरा निस्तार ।
कह भगवान सहाय आपका नहिं भूलूं उपकार ।।४।।

भजन नं० ८ (राग–मारवाड़ी)

आया गुरु स्वामी शरण तुम्हारी हो ।
सदगुरु बिन नही निस्तारा वेद पुकारी हो ।।टेर।।
भवसागर का पाट विकट नहिं लखै किनारी हो ।

काम क्रोध ग्राहा ने पकड़ी भुजा हमारी हो ॥१॥
जीवन नैया डूबरही है भव मझधारी हो।
दीन दयाल दयाकर करदो भवजल पारो हो ॥२॥
गुरु बिन भव दुख मिटे न मारी गुरुगीता पुकारी हो।
अधम उधारण जन्म सुधारण गुरु उपकारी हो ॥३॥
गोपीनाथजी सदगुरु पर तन मन धन वारी हो।
कह भगवान सहाय हरो सब शंका म्हारी हो ॥४॥

भजन नं० ९ (राग–पारवा)

नहिं गुरु बिन आतम ज्ञाना,
चाहे करलो जतन हजार ॥टेर॥
चाहे द्वारका काशी जाओ,
गया प्रयाग व गंगा न्हाओ,
कोटि कोटि तीरथ कर आवो,
नहिं गुरु बिन मिटे अंधार—
नहिं छूटे पाप पुराना ॥१॥
नित्य नियम मल करो सदाही,
जप तप व्रत धारो उर मांही,
सतगुरु बिन है निशफल भाई,
यह समझो सभी असार—
है कठिन मोक्ष का पाना ॥२॥

वेद पुराण पढो चाहे ग्रंथा,
बिना अर्थ नहिं मिटती चिन्ता,
गुरु बिन मिलेन मोक्ष का पन्था,
तू पूरण सतगुरु धार—
तब मिटे तिमिर अज्ञाना ॥३॥
गोपीनाथ जो गुरु ब्रह्मज्ञानी,
दे सद ज्ञान हरी भ्रम ग्लानी,
यों भगवान सहाय बखानी,
भूलूं नहीं उपकार—
फिर भवसागर नहिं आना ॥४॥

भजन नं० १० (राग-बनजारा)

समझकर देख लिया मैंने ,
नित्य में ब्रह्म निर्धारा ॥टेर॥
स्थूल सूक्ष्म हूं मैं नांही कारण महाकारण नहि भाई ।
सामान्य चेतन सुखदाई मैं ही हूं वार अरु पारा ॥१॥
स्वप्न अरु जाग्रत से न्यारा सुसापति का जाननहारा ।
मैं तुरियातीत इकसारा स्वयं मैं अचल अविकारा ॥२॥
मुझे चितमन नहीं जाना अहं बुद्धी न पहिचाना ।
लक्ष वाचा नहीं पाना विशेषण बिन निराकारा ॥३॥
मैं गोपीनाथ गुरु पाया आत्म निज रूप दर्शाया ।
भजन भगवान ने गाया किया भवजल से छुटकारा ॥४॥

(भगवान सहाय के भजन समाप्त)